चन्दूलाल कृत
स्तवन मंजरी
सं० डॉ० नरेश

चन्दूलाल कृत

स्तवन-मञ्जरी

चन्दूलाल कृत

स्तवन-मञ्जरी

डॉ० नरेश

□ डा नरेश

□ चन्दूलाल कृत स्तवन-मञ्जरी

□ डॉ. नरेश

□ प्रकाशक : साहित्य प्रतिष्ठान, चण्डीगढ़

□ मुद्रक : बंगड़ प्रिंटिंग प्रेस,
एम.सी ओ. 58, फेज-2, एस ए एस. नगर
(मोहाली)

□ मूल्य : पैंतीस रुपए

□ द्वितीय संस्करण : 1991

Chandu Lal Krit STAWANA-MANJARI : Dr. NARESH Rs. 35/-

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक पंजाब के एक चिर-विस्मृत परन्तु श्रेष्ठ हिन्दी कवि, पण्डित चन्दू लाल की जैन मूर्तिपूजक समाज से सम्बंधित रचनाओं का संग्रह है। आचार्य श्रीमद् विजयानन्द सूरीश्वर के उपदेशों एवं सतत प्रयत्नों के फलस्वरूप पजाब के जैनों में, मूर्ति-पूजा के प्रति जो उत्साह विकमी संवत 1946-47 में उत्पन्न हुआ, उसके परिणामस्वरुप पंजाब के अनेक नगरों में जैन मन्दिरों का निर्माण हुआ। धूमधाम के साथ इन मन्दिरों में तीर्थंकरों की मूर्तियाँ स्थापित की गई तथा प्रत्येक मूर्ति-प्रतिष्ठा के अवसर पर भारी उत्सव मनाया गया। प्रस्तुत पुस्तक, एक तरह से, पंजाब के जैन मन्दिरों का कविताबद्ध इतिहास है, जिसकी प्रामाणिकता सन्देहातीत है।

वर्षों के श्रम से चन्दू लाल की विविध कृतियाँ खोजकर, उनके सम्पादन-मूल्यांकनोपरान्त, पुस्तक-रूप में प्रस्तुत करने का समय आया तो स्तवन-मञ्जरी इस श्रृंखला की तीसरी कड़ी बनी। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण सन् 1977 में, पंजाब यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन ब्यूरो ने प्रकाशित किया था। मुझे प्रसन्नता है कि हिन्दी-जगत् ने इसका स्वागत किया तथा अब इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

—नरेश

प्रोफैसर आधुनिक साहित्य,
भाई वीर सिंह पीठ,
पंजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ़-160014

अपने भतीजे करुण के नाम

परिचयात्मक अध्ययन

विषय-वस्तु :

प्रस्तुत रचना का सम्बन्ध जैन धर्म के मूर्तिपूजक सम्प्रदाय से है। पंजाब में, किसी समय, ढूंढक सम्प्रदाय बहुत शक्तिशाली रहा है। लगभग सभी प्रमुख नगरों के श्रावकों पर इस सम्प्रदाय के साधुओं का अधिकार था। इसी सम्प्रदाय में दीक्षित होकर, इससे विमुख होने वाले न्यायांभोनिधि आचार्य श्रीमद् विजयानन्दसूरि, प्रसिद्ध नाम श्री आत्माराम ने पंजाब के श्रावक, श्राविकाओं को मूर्तिपूजा की ओर प्रवृत्त किया। जैन आगमों के विस्तृत अध्ययन एवं मनन के अतिरिक्त आचार्य ने अनेक नगरों का भ्रमण करके, अपनी ओजपूर्ण वाणी तथा सशक्त लेखनी द्वारा जैनधर्म की ह्रासोन्मुख मान्यताओं को पुनर्जीवित किया। इसी प्रयास की एक कड़ी थी—पंजाब में जैन मन्दिरों के निर्माण का उपक्रम।

मुनि आत्माराम ने, आरम्भ में, जैन स्थानकवासी साधु जीवन से ही आत्मसात किया था परन्तु उत्तम स्मरण शक्ति वाले आत्माराम जब अन्य साधुओं के मुख से जैन शास्त्रों की व्याख्या सुनते तथा उसमें विसंगतियाँ पाते तो उनके मन में अनेक शंकाएं उत्पन्न हो उठतीं। इन शंकाओं के समाधान का आग्रह तत्कालीन शिष्यपरम्परा की परिपाटी न थी, अतः व्याख्याकर्ता क्षुब्ध हो जाते। आत्माराम का मन इन व्याख्याओं को ज्यों का त्यों स्वीकार करने में असमर्थ था। ज्ञान की इसी पिपासा से आक्रान्त आत्माराम ने सं० १९३२ में, स्थानकवासी साधु जीवन का परित्याग करके, जैनधर्म की गतिविधियों के केन्द्र अहमदाबाद की ओर प्रयाण

किया। वहाँ जाकर आपने संविग्न-दीक्षा ग्रहण की। मुनि बुद्धिविजय ने आपको श्वेताम्बर मत में दीक्षित किया तथा आपने सतत् परिश्रम एवं साधना द्वारा जैन शास्त्रों एवं आगमों का अध्ययन किया। आपकी विद्वत्ता, तर्कसम्मत वक्तृता तथा संगठन पटुता से प्रभावित होकर, सं० १९४३ में, पालिताणा नामक स्थान पर, चतुर्विध संघ ने सामूहिक रूप से आपको 'आचार्य' की उपाधि से विभूषित किया। तभी से आत्माराम श्रीमद् विजयानन्द सूरि के नाम से जाने जाने लगे।

अनेक ग्रन्थों की रचना तथा अनेक पुरातन ग्रन्थों के जीर्णोद्धार के अतिरिक्त आपने देश के कतिपय नगरों का भ्रमण करके, जैन धर्म की विजय-पताका पुनः फहराई। इसी प्रयास का एक भाग था—पंजाब में मूर्ति पूजा का प्रचलन। मूर्ति पूजा के प्रचारार्थ आपने पंजाब के अनेक नगरों में व्याख्यान दिए तथा श्रावकों को मन्दिरों के निर्माण कार्य में प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया। स्वयं गुजरात से अनेकानेक जिन प्रतिमाएं भिजवाकर तथा अपने कर कमलों से उनकी स्थापना करके मुनि श्री ने इस कार्य में योगदान दिया।

यहाँ इस तथ्य का उल्लेख भी अप्रासंगिक न होगा कि मुनि श्री के स्थानकवासी जीवन का परित्याग करके, मूर्तिपूजक संघ में सम्मिलित होने पर, पंजाब के विस्थापित 'पूज्यों' ने आपका कड़ा विरोध किया। पहली बार जब आप गुजरात-भ्रमण के अनन्तर पंजाब लौटे तो इन पूज्यों ने श्रावकों को इस प्रकार के आदेश भिजवाए कि आपको आश्रय तथा अन्नजल न दिया जाए। परन्तु मुनि श्री के व्यक्तित्व का प्रभाव इतना तेजोमय था कि लोग स्वतः ही उनकी ओर आकर्षित हो जाते। इस तथ्य का ज्वलन्त प्रमाण यह है कि उसी क्षेत्र में, जहां विस्थापित मठाधीश आपका खुलकर विरोध कर रहे थे तथा आपके विरुद्ध श्रावकों को आदेश भिजवा रहे थे, आप न केवल श्रावकों द्वारा दिये गये अपूर्व सम्मान के भाजन बने अपितु आपने कतिपय नगरों में भव्य जिन मन्दिरों की स्थापना का कार्य भी सम्पन्न किया।

प्रस्तुत पुस्तक की विषय सामग्री इन्हीं मन्दिरों के निर्माण-इतिहास, मूर्ति-प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठा सम्बन्धी समारोहों तथा मन्दिरों के परिचयात्मक वर्णन से

सम्बन्ध रखती है। सं०१९४६ से सं० १९५२ तक के सात वर्षों में मुनि श्री के पंजाब-भ्रमण, मूर्ति स्थापन तथा तत्सम्बन्धी समारोहों का वृत्तान्त ही प्रस्तुत पुस्तक का कथ्य है।

भाषा-शैली :

प्रस्तुत पुस्तक इतिवृत्तात्मक रचना है। कवि ने पंजाब में विभिन्न नगरों के जैन मन्दिरों में, मूर्ति स्थापन के अवसरों पर जो पद रचना की, इसमें अधिकतर उन्हीं पदों को एकत्रित किया गया है। इन पदों में, कवि ने, स्वानुभूत वर्णन द्वारा इन जैन मन्दिरों के इतिहास के अनेक क्षणों को लेखनीबद्ध करके सुरक्षा प्रदान की है। इन पदों की भाषा सरल हिन्दी है, जिसमें ब्रज, उर्दू, पंजाबी, बांगरू तथा गुजराती का पुट परिलक्षित होता है। अनेक तत्सम तथा तद्भव शब्दों के साथ साथ, जहाँ एक ओर ग़रीबनवाज़, इलाज, जहाज़, अन्दाज़, आजिज़, बहाल, अक्ल, हुक्म, आला, इजलास, अदालत, गुलज़ार आदि अनेक उर्दू शब्दों का समावेश दृष्टिगोचर होता है, वहाँ साथ ही 'मोक्ष-महल' जैसे शब्दों की रचना करके, कवि ने हिन्दी तथा उर्दू के मिश्रण से नये शब्दों का निर्माण भी किया है। इसके अतिरिक्त इन पदों में 'दिल से' के स्थान पर 'दिलों', 'सात' के स्थान पर 'सत', 'चला रहे' के स्थान पर 'तोर रहे' आदि प्रयोग; बहुवचन बनाने में 'ओं' के स्थान पर 'आं' का प्रयोग (यथा—बहसों के स्थान पर बहसाँ); तथा कीता, कट्ठ, उड़ीकें, नाल, करत्याँ आदि पंजाबी-शब्दों का प्रयोग, चन्दूलाल की भाषा पर पड़े पंजाबी के प्रभाव को स्पष्ट करता है। इसी प्रकार अनेकाँ, थारी आदि बाँगरू भाषा के शब्द तथा पण, छे (है), आगल आदि गुजराती भाषा के शब्दों का प्रयोग भी प्राप्त होता है।

कवि का उद्देश्य क्योंकि उत्सवों का स्वानुभूत वर्णन करना ही है, इसलिये उनकी शैली इतिवृत्तात्मक तथा आत्मपरक हो गई है।

छन्द :

जैसा ऊपर बताया गया है, चन्दूलाल ने इन स्तवनों की रचना पंजाब के विभिन्न नगरों में, जिन-प्रतिमा-प्रतिष्ठा के विभिन्न अवसरों पर की थी। इन पदों

के पाठ से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि कवि स्वयं, अपने सहयोगियों के साथ, इन समारोहों में सम्मिलित होकर इनका गायन करते रहे हैं। गायन में वाद्यों के होने का संकेत भी यदाकदा दे दिया गया है। अभिप्राय यह, कि इन रचनाओं में संगीतात्मकता की प्रचुरता का होना स्वाभाविक है। विभिन्न राग रागनियों पर आधारित ये रचनायें कवि के संगीत विषयक ज्ञान की परिचायक भी हैं। कर्ण-माधुर्य तथा कर्ण-प्रियता इन रचनाओ के अतिरिक्त गुण हैं। कान्हड़ा, देश, जोग, कल्याण, विहाग, जिला, ठुमरी आदि राग रागनियों के आधार पर रचित इन पदों में छन्दों की विविधता के दर्शन होते हैं। इसके अतिरिक्त लोकगीतों की ध्वनियों पर आधारित कतिपय पदों में 'टेक' का आयोजन भी किया गया है।

अलंकार :

इन पदों की रचना में कवि का उद्देश्य न तो पाण्डित्य-प्रदर्शन रहा है, न ही अपनी कवित्व-शक्ति का सिक्का जमाना। सहज साधारण ढंग से, इतिवृत्तात्मक शैली में, कवि ने इन रचनाओं द्वारा, विभिन्न समारोहों का वृत्तान्त कविताबद्ध किया है। अलंकारों का प्रचुर प्रयोग इनमें उपलब्ध नहीं होता। इसके दो कारण हो सकते हैं। प्रथम यह कि कवि ने, इतिवृत्त के मोह-वश, काव्य-कौशल-प्रदर्शन की चिन्ता ही नहीं की। दूसरे यह कि क्योंकि इन पदों के श्रोता तत्कालीन अनपढ़ या कम पढ़े लिखे साधारण व्यापारी होते थे, इसलिए कवि ने अलंकारों का प्रयोग, सम्भवत: इस आशय से नहीं किया कि ये रचनायें सहज, सुबोध तथा सरल रहें। तब भी स्वाभाविक ढंग से ही, उपमा तथा रूपक आदि कुछेक अलंकारों के दर्शन इन रचनाओं में होते हैं। उपमा के प्रयोग के कुछ उदाहरण देखिए :—

(१) जैसे सिंह स्वरूप देख के अजा तुरत नस जाई।
ऐसे प्रभु के गुण गयाँ से पाप पटल कट जाई।
(पद—१९)

(२) तिमि चतुर्संघ का कट्ठ हुआ
जिमि चढ़ी घटा मानो सावन।
(पद—३६)

(३) दिन रात उड़ीकें गाहकों को जिमि चन्दा चारु चकोर रहे।
(पद—३६)

(४) सर्व सभा में यूं मुनि सोहें शोभा कही न जाए,
जैसे निशि उडगन में चन्दा।
(पद—४५)

रूपक अलंकार का एक उदाहरण भी देखिए :—

दास जान के किरपा कीनो तुमरी शरण तकाई,
मेरा लिप्ट्यो मन मकरन्दा।
(पद—४५)

अस्तु, कवि का आशय अलंकार-चमत्कृता द्वारा श्रोता को प्रभावित करना नहीं था अपितु सर्वसाधारण जैन श्रावकों के बौद्धिक स्तर की अनुकूलता ही उन्हें अभीष्ट थी। फिर भी सहज रूप से कुछेक अलंकार इन रचनाओं में समाविष्ट हो गये हैं।

सामाजिकता :

प्रस्तुत पुस्तक के अध्ययन से जिस समाज का चित्र हमारे सामने उद्घाटित होता है, वह है जैन-मूर्ति-पूजक-समाज तथा इसका क्षेत्र है अविभाजित पंजाब के प्रमुख नगर। इस समाज का आधार हैं साधारण व्यापारी लोग तथा समाज के इस रूप के निर्माता हैं आचार्य श्री विजयानन्द सूरि। ऊपर भी कहा गया है कि पंजाब में, किसी समय, ढूंढक सम्प्रदाय बहुत शक्तिशाली रहा है तथा जैन श्रावकों के निकट इसी सम्प्रदाय के साधुओं एवं पूज्यों का महत्त्व था। आचार्य श्री ने अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व, ओजपूर्ण प्रतिभा तथा प्रेरणादायक उपदेशों द्वारा तत्कालीन समाज को जैन-आगमों के वास्तविक अर्थों से परिचित कराया, अपनी व्याख्याएँ स्वीकार करने के लिए उन्हें प्रेरित किया तथा एक नये समाज की स्थापना की। यही नया समाज, प्रस्तुत पुस्तक में, विजयी, आनन्दोल्लसित तथा धर्म-प्रमत्त समाज के रूप में प्रकट हुआ है। इस नूतन समाज की स्थापना में आचार्य श्री को

जिस कटु विरोध एवं विविध बाधाओं का सामना करना पड़ा, उनका वर्णन यहां प्रासंगिक न होगा, परन्तु बात यहीं समाप्त नहीं हो गई थी। नवीन समाज को स्वयं भी विपरीत परिस्थितियों से जूझ कर अपने लिए सम्मानपूर्वक स्थान बनाना पड़ा। मालेरकोटला की घटनाएँ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इस मूर्तिपूजक नूतन समाज ने जब आचार्य श्री से प्रेरणा प्राप्त करके, तीर्थंकरों की रथयात्रा तथा महेन्द्र ध्वज के जुलूस का आयोजन किया तो 'पूज्यों' के श्रद्धालुओं ने उनका कड़ा विरोध किया। फलतः वहां उपद्रव की स्थिति उत्पन्न हो गई। मामला तत्कालीन रियासत-सरकार तक पहुंचा। मुकद्दमेबाज़ी हुई। लुधियाना से ब्रिटिश एजेन्ट को निर्णय के लिये आमन्त्रित किया गया। निर्णय मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के पक्ष में हुआ। तब जाकर इस सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा बनी।

इस समाज की सम्मान-प्रतिष्ठा के साथ-साथ आचार्य श्री इसे एक सुस्थिर, गौरवपूर्ण, शाश्वत रूप प्रदान करना चाहते थे। इसलिए वे अपने प्रवचनों द्वारा समर्थ जैन श्रावक श्राविकाओं को मन्दिर निर्माण की ओर प्रवृत्त करते थे। ज़ीरा में राधाबाई तथा होश्यारपुर में गुज्जर मल्ल को मन्दिर बनवाने की प्रेरणा आचार्य श्री के प्रवचनों से ही प्राप्त हुई थी। फलस्वरूप, इन दोनों नगरों में भव्य मन्दिरों का निर्माण हुआ। इस समाज में 'मन्दिर' का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। ये लोग प्रातःकाल नग्न-चरण, पीतवसन धारण करके मन्दिर में जाते हैं। जिन-प्रतिमा को स्नान करा कर, शुद्ध वस्त्र पहना कर, तिलक देकर नमस्कार करते हैं। पुष्प, नैवेद्य आदि अष्टद्रव्यों से मूर्ति की पूजा करते हैं तथा तीर्थंकरों एवं गुरुओं की स्तुति करते हैं। पूजा की यह प्रक्रिया व्यक्तिगत भी है तथा सामूहिक भी।

इसके अतिरिक्त जो बात विशेष रूप से इस समाज के वर्णन में कवि ने दिखाई है, वह है इनका पारस्परिक भ्रातृ-भाव। जहां भी जैन मन्दिरों में मूर्ति प्रतिष्ठा का अवसर आया है, वहां के आयोजकों ने अन्य नगरों के श्रावकों को आमन्त्रित किया तथा सहधर्मी लोग उस स्थान पर एकत्रित हुए। यहां तक कि गुजरात तक से लोगों को आमन्त्रित किया जाता रहा तथा वहां के लोग पंजाब आकर इन समारोहों में सम्मिलित होते रहे।

प्रस्तुत पुस्तक से इस समाज में व्याप्त अनेक त्रुटियों का परिचय भी प्राप्त होता है। यह भी विदित होता है कि तत्कालीन विचारक, सम्पादक एवं साधु इन त्रुटियों की विद्यमानता से खिन्न थे तथा वे इनके निवारण का प्रयास भी करते थे। 'प्रदर्शन' इस समाज की सबसे बड़ी त्रुटि थी। छोटे छोटे अवसरों पर अधिक धन व्यय करके अपने धनी होने का प्रदर्शन करना इस समाज के सदस्यों का स्वभाव था। इससे अनेक ऐसी परिपाटियों का प्रचलन इस समाज में हो गया था कि निर्धन वर्ग को उनके साथ संगति बैठाना दुस्तर होने लगा था[1]। स्वयं आचार्य श्री आत्माराम ने १९४८ वि० में, अमृतसर में मूर्ति-प्रतिष्ठा के अवसर पर एकत्रित विशाल श्रावक-समूह को सम्बोधित करते हुए उन्हें इन त्रुटियों से अवगत कराया था तथा दृढ़ता से इनके उन्मूलन का आग्रह भी किया था[2]।

कुल मिलाकर, यह समाज धर्म-भीरु, गुरु भक्त, सम्मानाभिलाषी तथा भ्रातृ-भाव परिपूर्ण समाज था, जो आज भी अपने परिवर्तित परन्तु ह्रासोन्मुख रूप में पंजाब के नगरों में विद्यमान है।

दार्शनिकता :

ऐतिहासिक तथा सामाजिक पक्षों के साथ-साथ इस पुस्तक का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष भी है — इसकी दार्शनिकता। यद्यपि प्रस्तुत पदों की रचना कवि ने किसी विचारधारा की स्थापना या किसी दर्शन विशेष के प्रतिष्ठापन के उद्देश्य से नहीं की, परन्तु क्योंकि पुस्तक के सम्पूर्ण कथ्य का एक निश्चित विचारधारा के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि इन पदों में सम्बद्ध विचारधारा की दार्शनिक पृष्ठभूमि आलोकमान हो जाए। जैन समाज में मूर्ति-पूजा का विधान कब से हुआ तथा किस प्रदेश में इसका प्रचलन कब हुआ, इसके उल्लेख की आवश्यकता यहाँ नहीं है, परन्तु यह बता देना अनुचित न होगा कि स्थानकवासी सम्प्रदाय का उद्भव मूर्तिपूजा के अस्वीकार पक्ष में हुआ था। विक्रम की सोलहवीं शताब्दी में लोंकाशाह ने मूर्तिपूजा का विरोध करके, आचार की

१. देखिये पद सं० ३९
२. बाबूराम : आत्मचरित्र : पृ० २११

कठोरता का पक्ष प्रबल किया था। इन्हीं लोंकाशाह के अनुयायियों में से स्थानक-वासी सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ।[1] यह सम्प्रदाय थोड़ी अवधि में ही शक्तिशाली रूप धारण करने में सफल हो गया।

पंजाब में मूर्तिपूजा किस रूप में तथा कहाँ-कहाँ विद्यमान रही है, यह बताना तो कठिन है परन्तु यह निश्चित है कि वर्तमान काल में जो मन्दिर दिखाई देते हैं उनमें अधिकतर ऐसे हैं जिनका निर्माण लगभग एक शताब्दी पूर्व, मुनि श्री आत्माराम की प्रेरणा से, हुआ था। मन्दिर-निर्माण तथा मूर्तिपूजा के इस आन्दोलन का विरोध भी हुआ, परन्तु यह विरोध इस आन्दोलन की गति को अवरुद्ध न कर सका। मुनि श्री के जीवन काल में, पंजाब में, मूर्तिपूजक सम्प्रदाय का डंका बजता रहा तथा इस सम्प्रदाय के लोगों का उत्साह ऊर्ध्वमुख रहा। फलतः कतिपय नगरों में मन्दिरों का निर्माण हुआ। स्वयं आचार्य श्री ने गुजरात से तीर्थंकरों की अनेक मूर्तियाँ पंजाब भिजवाईं तथा अपने कर-कमलों द्वारा, विभिन्न स्थानों पर उनकी स्थापना भी की। मूर्ति-प्रतिष्ठा के अवसर पर विशाल समारोहों का आयोजन किया गया। तीर्थंकरों की रथ-यात्रा हुई तथा स्तुतिगायन करते हुए श्रावकों ने अपने हार्दिक आनन्द की अभिव्यक्ति की।

मूर्तिपूजा के महत्व को स्वीकार करके कवि न केवल श्रोताओं को ही मूर्ति पूजा का आह्वान करता है अपितु स्वयं भी भक्ति भाव से नाम-स्मरण में निमग्न होता है। भक्ति का जो स्वरूप इस पुस्तक के अध्ययन से प्राप्त होता है, उसमें कवि आख्याता न होकर याचक बन निकलता है। यही कारण है कि चन्दूलाल अपने अनेक पदों में, अपने लिए ईश कृपा का वरदान मांगते हैं। वैयक्तिकता का यह पुट कवि तथा उसकी कविता का साधारणीकरण भी करता है।

यद्यपि चन्दूलाल ने भक्ति के स्मरण, वन्दन तथा कीर्तन रूप पर ही अधिक बल दिया है, फिर भी पूजा की जो विधि जैन-सूत्रों में वर्णित तथा आचार्य श्री द्वारा प्रचारित थी, उसकी स्थापना भी कवि ने दृढ़ता से की है। यह विधि है—प्रातःकाल अपना शरीर शोधन करके मन्दिर में जाना, प्रभु की मूर्ति को स्नान

१. मुनि नथमल : जैन दर्शन—मनन और मीमांसा : पृ० ७३

कराना, मूर्ति को शुद्ध वस्त्राभूषण पहनाना, अष्टद्रव्य से पूजा करना आदि। जैन सूत्रों में पूजा की इस विधि को "अष्टप्रकारी" पूजा कहा गया है। पूजा की इस विधि का महत्व संक्षेप में इस प्रकार है :—

(१) **स्नान कराना**

जैसे जल से मूर्ति पर पड़ी धूल उतर रही है, वैसे ही मेरे जीवन पर जमी कर्मों की धूल उतर जाए।

(२) **चन्दन चढ़ाना**

जैसे चन्दन तथा केशर से वातावरण में व्याप्त दुर्गन्ध का नाश होता है, उसी प्रकार मेरी वासना का नाश हो जाए।

(३) **पुष्प चढ़ाना**

फूलों को कामदेव के वाण कहा गया है। मूर्ति के आगे पुष्प रखने का अर्थ है कि कामदेव के ये वाण तेरे चरणों में ही रहें तथा मैं इनसे सुरक्षित रहूँ।

(४) **धूप देना**

जैसे धूप के तत्व अग्नि में जल रहे हैं, वैसे ही मेरे दोष भी भक्ति की अग्नि में जल जाएँ तथा जैसे इसकी भाष्प सुगधित धूम्र बन कर उड़ रही है, उसी प्रकार मेरा जीवन भी ऊर्ध्वगामी हो तथा संसार को सुरभित करे।

(५) **दीप जलाना**

जैसे दीपक के जलने से अन्धकार दूर हो जाता है, उसी प्रकार मेरे मन में तेरी भक्ति का दीपक जले तथा अज्ञान-तिमिर का नाश हो।

(६) **अक्षत चढ़ाना**

जिस प्रकार ये पदार्थ अक्षत हैं उसी प्रकार मेरा आनन्द कभी क्षत न हो।

(७) **पकवान चढ़ाना**

मैं इसे हमेशा से खा रहा हूँ। तेरे चरणों में इसे इसलिए रख रहा हूँ कि मैं क्षुधा की पीड़ा से मुक्त रहूँ।

(८) **फल चढ़ाना**

जैसे फल वृक्ष की उपलब्धि है, उसी प्रकार मेरी भक्ति की उपलब्धि में मुझे मुक्ति रूपी फल की प्राप्ति हो।

चन्दूलाल के निकट मूर्ति के दर्शन मात्र से भी हृदय की तपन मिटती है, दुःख नष्ट होता है, आनन्द की उत्पत्ति होती है, पापों का अवसान होता है तथा अज्ञान तिमिर का नाश होता है। भक्तिभाव द्वारा की गई मूर्तिपूजा, पाप-पटल काटती है, भवसागर से पार उतारती है, कर्म जंजाल को नष्ट करती है, जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति दिलाती है, नरक गति का क्षय करती है तथा अज्ञान का नाश करती है। पूजा से आठों सिद्धियों तथा नौ निधियों की प्राप्ति होती है तथा काम, अर्थ, धर्म एवं मोक्ष सुलभ हो जाते हैं। इसमें नाम-स्मरण को सर्वोपरि बताते हुए कवि कहते हैं :—

तुमरे नाम की नौका बना के भवसागर तर जाऊँ।
(पद-५५)

इस भक्ति को मात्र मन्दिर में जाकर, विधिवत पूजा से जोड़कर, चन्दूलाल इसे कोरे कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं करते अपितु वे जीवन में जप, तप, दान तथा दया के गुणों की विद्यमानता को भक्ति से अधिक महत्व देते हैं। इसीलिए कवि ने प्रभु-पूजन तथा मन्त्र-जाप को इन गुणों के बाद स्थान दिया है। कहते हैं :—

जप तप दान दया प्रभु पूजन मंत्र जपो नवकार रे।
यह वस्तु है सार जगत में कीजे भव से पार रे॥
(पद-९)

भवसागर से पार उतरने के लिए मात्र प्रभुपूजन या णमोकार मन्त्र का जाप ही पर्याप्त नहीं है, इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है जप, तप, दान तथा दया। जप से मन एकाग्र होता है तथा अहंकार भाव के प्रहारों से सुरक्षित रहता है। तप से स्वेच्छाचारिता का दमन होता है। दान से स्वार्थ, लोभ, तृष्णा एवं लालसा की समाप्ति होती है। दया से उदात्त चरित्र का निर्माण होता है तथा एकत्व-भावना का उदय होता है।

स्व-परिचय :

प्रस्तुत पदावली में यद्यपि कवि ने अनेक स्थानों पर तत्सम्बन्धी उत्सवों में अपने सम्मिलित होने का संकेत दिया है परन्तु इनसे उनका सन्तोषजनक परिचय प्राप्त नहीं होता। केवल इस बात का उल्लेख अवश्य बार-बार किया जाता है कि चन्दूलाल मालेरकोटला के रहने वाले थे, तथा उनके हृदय में आचार्य श्रीमद् विजयानन्द सूरि के प्रति अगाध श्रद्धा थी। इन्हीं पदों से उनके गायक होने का परिचय भी मिलता है। अपने सहयोगियों में से बज़ीरी मल तथा तेलूराम ही का उल्लेख कवि ने किया है। बज़ीरी मल तबलावादक थे तथा तेलूराम सारंगी वादक। पद सं० ४४ से यह भी विदित होता है कि कवि को इनकी मण्डली सहित, अन्य नगरों में निमन्त्रित किया जाता था तथा वे वहाँ जाकर इन रचनाओं को गायन द्वारा प्रस्तुत करते थे। इसी पद से यह भी ज्ञात होता है कि उन्हें सं० १९५३ में नेत्र रोग हुआ। यही रोग आगे चल कर उन्हें नेत्र-ज्योति-विहीन कर गया।

रचना-काल :

प्रस्तुत पुस्तक में संग्रहीत समस्त पदों का सम्बन्ध क्योंकि, किसी न किसी नगर में हुई जैन मन्दिर की स्थापना, मूर्ति प्रतिष्ठा अथवा तत्सम्बन्धी धार्मिक उत्सवों से है; तथा क्योंकि कवि ने स्थान-स्थान पर आयोजित इन समारोहों में अपने सम्मिलित होने का सकेत दिया है, इसलिए यह कहना तर्कसंगत प्रतीत होता है कि इस पुस्तक का रचनाकाल संवत् १९४६ वि०—१९५३ वि० है। विभिन्न नगरों में आयोजित उत्सवों का क्रमिक विवरण इस प्रकार है :—

देहली — १९४६ वि०
लुधियाना — १९४७ वि०
मालेरकोटला— १९४७ वि०
अमृतसर — १९४८ वि०
ज़ीरा — १९४८ वि०
होश्यारपुर — १९४८ वि०
अम्बाला — १९५२ वि०
सनखतरा — १९५३ वि०
हेमनगर — १९५३ वि०
नारोवाल — १९५३ वि०

उपरोक्त तथ्यों की पुष्टि कुछेक स्थानों पर तो स्वयं कवि ने भी की है। यथा—पद सं० ३१ में, साल एक नव वेद अष्ट सित मघसिर शुभ छाया (१९४८), पद० ३५ में, साल एक नव वेद आठ सित माघ पंचमी ज्ञ वारी (१९४८) आदि का उल्लेख किया गया है। पदों में स्थान-स्थान पर 'चन्दूलाल गाया', 'कहे चन्दूलाल', 'पद बनाया' आदि के प्रयोग से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है कि कवि ने इन पदों की रचना सम्बद्ध उत्सवों के लिए ही की थी। इन रचनाओं का, वाद्यों की सहायता से कवि ने गायन भी किया। पदों में कवि की दंगल-प्रारम्भ की घोषणा, ध्वजा के स्तुति-गान का उल्लेख तथा 'श्रवण होश्यारपुर में यह बनाया' आदि संकेत भी इसके पुष्ट प्रमाण हैं।

एक

सिमर नर गुरु दादा[1] के चरणा,
वा का नाम लिए भव तरणा।
बावन वीर करें नित सेवा चौंसठ योगिणी शरणा,
डायन भूत परेत पिशाचा नाम लिये होत वरणा,
श्री श्री कुशल गुरु सूरी का नाम हृदय में धरणा,
देहली नगर में बाजत डंका काटें जन्म जरा मरणा,
'चन्दूलाल' मतिहीन दीन का काज गुरु इक करणा,
जन्म जन्म तुमरे गुण गाऊँ पाँच बिध्न[2] नित हरणा॥

दो

जपो नर नाथ सुमति अवतारी,
आज रंग है मंदिर में सब चलो लाभ हो भारी।
देहली नगर प्रभु राजत भ्राजत दर्श करत नर नारी,
कर कंकन सिर मुकुट विराजे कुण्डल जोत उजारी,

१. श्री जिनदत्त सूरि एवं मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरि।
२. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार

अष्टादश दूषण[1] प्रभु त्यागे तीन ज्ञान[2] घट धारी,
देश देश के यात्री आए बोलत जय जयकारी,
'चन्दूलाल' माँगत कर जोरी भव भव सेव तिहारी ॥

तीन

नीलकुण्ड प्रभु पार्श्व जिनेश्वर कर दर्शन आनन्द लह्यो रे,
श्याम वरण कर कंकन की छवि शीश मुकुट अहि राज[3] रह्यो रे,
आठ[4] कर्म प्रभु दूर निवारे पाँच विघ्न छिन माँहि खह्यो[5] रे,
अष्टादश दूषण प्रभु त्यागे बारह[6] गुण परधान[7] करयो रे,
तीन भुवन को नायक श्री जिन निर्मल चन्द जिनंद भयो रे,
महिमा अपरम्पार प्रभु की लुधियाना विच[8] बास थयो रे,

१. अठारह दूषण—दानान्तराय, भोगान्तराय, लाभान्तराय, उपभोगांतराय, वीर्यान्तराय, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, अज्ञान, मिथ्यात्व, निद्रा, अव्रत, राग, द्वेष, काम
२. अवधि ज्ञान, मनपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान
३. नागराज
४. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अन्तराय, वेदनीय, आयु, नाम, गोत्र नामक आठ कर्म
५. खो दिए, समाप्त कर दिए
६. अच्छवी, असबले अकम्मंसे, संसुद्धाणाण-दंसणधरे, जिणे, केवली, अपरिस्सावी, अरहा, उपायापगम अतिशय, अनातिशय, पूजातिशय, वचनातिशय ।
७. परिधान
८. में

कर दर्शन सेवक सुख पावन[1] चरण कमल तुम आन गह्यो रे,
कर दर्शन सुमता तन उपजी कुमत नसी अघ दूर गयो रे,
'चन्दूलाल' लई शरण चरण की जान अनाथको त्राण दयो रे ॥

चार

चित हित से प्रभु पार्स[2] रटूं ।
जग वल्लभ जग ईश शिवंकर नगर कोटले[3] वास रटूं,
अग्नी से प्रभु सर्प निकास्यो मान कपट कियो नास रटूं,
असरण शरण चरण अहि लक्षण राग सहित गत हास[4] रटूं,
'चन्दूलाल' पारस प्रभु परसत मिटे नरक गति त्रास रटूं ॥

पाँच

सभा श्री मन्दिर बीच लगाई, तिथ पंचम आछी आई,
सब श्रावक प्रभु के गुण गावें तन मन धन चित लाई,
दर्शन पावन अस्तुति गावन आनन्द उर न समाई,

१. पाते हैं
२. पार्श्वनाथ
३. मालेरकोटला
४. इतिहास

भगत वज़ीरी[1] मृदंग ऊपर अद्भुत थाप लगाई,
तेलूराम[2] ने पकड़ सारंगी झटपट साथ मिलाई,
सन्मुख मूर्ति शीतल प्रभु की सो हमरे मन भाई,
'चन्दूलाल' प्रभु की किरपा से नीकी गाथ बनाई ॥

छः

हेरी हेरी आली जिनवर जिनेश मनाया।
सीस मुकुट कर कंकन राजे अरुण वर्ण मन भाया,
समोसरण रचना सुर कीन्ही सुरवधु मंगल गाया,
चौंसठ इन्द्र[3] खड़े द्वारे तेरे कर नाटक सुख पाया,
ताल झाँज वैन वासुरिया शंख—पछांग[4] बजाया,
धूप दीप नैवेद्य फूल फल विधि से आन चढ़ाया,
तीन ज्ञान प्रतिहार्या[5] आठों भक्त वछल[6] फलदाया,
चित्त हित्त से प्रभु गुण गावें आवागमन मिटाया,

१. चन्दूलाल के साथी, जो उनके साथ भजन-गायन के समय ढोलक बजाते थे।
२. तेलूराम—चन्दूलाल के गायन के साथी।
३. वैमानिक, भुवनपति तथा व्यंतर योनि आदि के ६४ इन्द्र—दे० परिशिष्ट—३
४. पंचांग शंख
५. अशोक वृक्ष, देवों द्वारा पुष्प वर्षा, चामर-युगल, श्रेष्ठ सिंहासन, भाममण्डल, छत्र, योजनगा वाणी तथा देव दुंदुभि।
६. भक्त-वत्सल

अजर अमर अज अलख अरूपी मदन कदन जिनराया,
'चन्दूलाल' तुमरो गुण गावे चरण कमल चित लाया ॥

सात

जगवल्लभ पार्श्वनाथ प्रभु के चरणन पर बलिहारी,
दो भुज दण्ड रत्न गलमाला कुंडल की छवि न्यारी,
अष्टादश दूषण प्रभु त्यागे द्वादश गुण अधिकारी,
चौंतीस अतिशय[1] पैंतीस वाणी[2] अष्टकरम मल जारी,[3]
अजर अमर अज ईश शिवंकर अचल अमल अविकारी,
नगर कोटले वास कियो प्रभु पूजत सब नर नारी,
'चन्दूलाल' प्रभु यह वर माँगत भव भव सेव तुम्हारी ॥

आठ

जान अधम मोहे पावन कीजे जगवल्लभ जिनराज,
जगनायक जग बीच कहायो तारन तरन जहाज,
जगमग जोत विराजे श्रीजिन नाम ग़रीबनवाज,

१. अपायापगमातिशय, ज्ञानातिशय, पूजातिशय, वचनातिशय के ३४ उपभेद। दे० परिशिष्ट—४
२. वाणी के ३५ गुण। देखिए परिशिष्ट – १
३. जला दिया, समाप्त कर दिया

जोड़ी[1] ताल मृदंग तंबूरा रहे मन्दिर में बाज,
जिन सेवक करते नित पूजन देख कुमत गयो भाज,
जग में दीन अनेकाँ तारे किम वरणूँ अन्दाज,
जन की वार करी किम देरी ना कुछ कियो अकाज,
जोड़ दोऊ कर माँगत 'चन्दू' सुन हमरे सिरताज,
जन्म जन्म तुमरे गुण गाऊँ ऐसा करो इलाज ॥

नौ

जिन भक्ति हिय धार बावरे।
यह संसार सभी मतलब को मात पिता परिवार रे,
चेतन निकस चले जब तेरा कर आवनगे[2] छार रे,
सुन्दर रूप द्रव्य बहुतेरा सुपना दिलों[3] विसार रे,
काल वली तें सब जग काँपा देव असुर नर नार रे,
तप जप दया दान प्रभु पूजन मन्त्र जपो नवकार[4] रे,
यह वस्तू है सार जगत में कीजे भव से पार रे,
जिन तन मन से कीना पूजन संग कुगुरु का टार रे,
'चन्दूलाल' मिले चार[5] पदारथ कटी कर्मगति चार[6] रे ॥

१. तबला
२. आवेंगे
३. दिल से
४. णमोकार मन्त्र, नमस्कार मन्त्र
५. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
६ नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव

दस

मालेरकोटला बीच में सुनता है अप्पील[1]।
सॉब बहादुर एजेन्ट[2] जो नाम कहें वैकफील ॥
बड़ी दलील साहिब वो माने लुधियाना वाला ई[3],
क्या खूब शक्ल है बड़ी अकल करे आजिज़ की प्रितपालाई,
साच्यां को करे बहाल सॉब झूठ्यां ख़ारिज कर डाला ई[4],
दिया हुक्म ध्वजा का निकले शहर में हुक्म सॉब का आला ई[5],
झट चढ़े महकने सभी रंग नौ गार्द एक रिसाला ई,
तहसीलदार इजलास अदालत चढ़े सभी कर ख्याला ई,
चढ़ा कोतवाल संग सजे पुलिस हथकड़ियाँ संगल ताला ई,
रथ बग्घी पीनस फिरे शहर में बाजा बजत विशाला ई,

१. मालेरकोटला में एक बार स्थानकवासी तथा मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के अनुयायियों में झगड़ा हुआ। स्थानकवासी अपने प्रतिद्वन्द्वियों के ध्वजा का जुलूस निकालने के विरुद्ध थे। नवाब मालेरकोटला ने स्वयं इस झंझट में न पड़कर इसका निर्णय वैकफील नामक अंग्रेज सरकार के एजेन्ट पर छोड़ दिया जिसने अपील सुनी तथा मूर्तिपूजकों के पक्ष में निर्णय दिया।
२. ब्रिटिश राज्य का एजेन्ट
३. है
४. कर डाला है
५. उत्तम है

तेरह

सन्तनाथ महाराज को नमन करूँ बहुवार ।
पतित उधारन शुभकरन निज सेवक उद्धार ॥
प्रभू तारन नाम तिहारो छे[1],
अष्टादश दूषण दूर किए प्रभु चार महाव्रत[2] धारो छे,
तुम तीन ज्ञान[3] के धारक प्रभु जी जगत बीच उजयारो छे,
अब 'चन्दूलाल' पे करो कृपा दासानुदास तिहारो छे।
मैं तुझे मनाता, चरण में शीश नवाता,
दंगल[4] के दरम्यान साज सब शुरू कराता ॥

तिथि दुतिया भादों[5] सुदी शुक्करवार[6] सुहाय ।
रथ यात्रा को प्रभु चले उपमा कही न जाय ॥

---

१. है का गुजराती रूप
२. प्राणातिपात विरमण व्रत, मृषावाद विरमण व्रत, अदत्तादान विरमण व्रत, परिग्रह परिमाण व्रत (सव्वातो पाणातिपातिवाओ वेरमणं, एवं मुसावायाओ वेरमणं, सव्वातो अदिन्नादाणावो वेरमणं, सव्वातो बहिद्धादाणाओ वेरमणं—स्थानांग सूत्र—२६६)
३. अवधि ज्ञान, मनपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान
४. कविता की प्रतियोगिता, अखाड़ाबाजी
५. भाद्रपद महीने का शुक्ल पक्ष
६. शुक्रवार का पंजाबी रूप

प्रभु समोसरण में राजत हैं,
प्रभु आगे ध्वजा महेन्द्र चले संग अनहद बाजे बाजत हैं,
प्रभु सन्तनाथ के बिम्ब मनोहर नर नारी मन भावत हैं,
कहीं ताल सारंगी बाजत जोड़ी प्रभु सेवक गुण गावत हैं,
कहे 'चन्दूलाल' जो प्रभु गुण गावें मोक्ष-महल सुख पावत हैं ।
मैं साच सुनाता, सूत्र ज्ञाता फर्माता,
श्री श्री विजयानन्द खोल सूत्तर[1] दिखलाता ॥

ध्वजा महेन्दर की छवि क्या कुछ कहूँ सुनाय ।
अति ऊँचा विस्तार है रही गगन में छाय ॥
प्रभू आगल रहती सदा खड़ी,
अनगिनत शंख घड़ियाल ध्वजा पर यथा मेघ घट छाइ झड़ी,
कोई लाल पीत कोई श्वेत हरित कई लगे चक्र क्या खूब मड़ी[2],
इक शिखर पताका सोहे ध्वजा के ज़री बादले जड़ित जड़ी,
प्रभु सेवक देख अनंद भए जब घुँघरू की छनकार पड़ी,
कहे 'चन्दूलाल' प्रभु जी के सेवक दर्श करें षटचार घड़ी ।
सुन्दर छवि छाई, देखते लोग लुगाई,
गुरु किरपा से आज ध्वजा की अस्तुति गाई ॥

---

१. सूत्र, आचारंग
२. मंढी हुई

कहे 'चन्दूलाल' सुर्जन निहाल हुआ दुर्जन का मुँह काला ई,
मैं अस्तुति गाई, सुनो साधर्मी भाई,
मंगल हुए अनेक छवि कुछ वर्णी न जाई ॥

ग्यारह

फरके फरके ध्वजा के फर्रे,
सोग दुश्मन[1] के घर रे।
जिनके हैं भगवान् उन्हों को किसका डर रे ॥
मालेरकोटला बीच में कूचा है ठठियार,
पार्श्व प्रभु महाराज का मन्दिर हुआ त्यार;
लगी गुलज़ार कलश सोरण के झलक रहे न्यारे,
क्या सत[2] दरवाज़े सोलह तंदरियाँ सुन्दर फर्श लगा सारे,
सन्मुख चुगान[3] सुन करके ध्यान जहां बैठे आन सब नर नारे,
मन्दिर में आज प्रभु पार्श्वनाथ कीता[4] निवास सेवक तारे,
पच्छिम में गुरु दादा के चरण दक्खिन में भैरव किलकारे,
क्या देश देश के श्रावक आए बोल रहे हैं जयकारे,
कोई छत्र फिरावे चौर कोई कोई फूलमाल गल में डारे,

१. प्रतिद्वन्द्वी से अभिप्राय है
२. सात
३. चौगान
४. किया

कहे 'चन्दूलाल' जीते[1] जिन सेवक ढूँढमती[2] सगरे हारे,
गुरु किरपा कीनी, बुद्ध हिरदे में दीनी,
डूबन को अभिमान तरण को पकड़ अधीनी ॥

बारह

सावन बदि[3] तिथ पंचमी सुन्दर मंगलवार।
मन्दिर को मूर्ति चली करें मंगलाचार ॥
सभी नर नार खुशी मन धार प्रभू पारस के गुण सब गाते हैं,
यह धन्य घड़ी हुई ध्वजा खड़ी मनो गगन चढ़ी सब दिल में शुकर मनाते हैं,
श्रावक सुचंद हो हो अनन्द मुखों गाते छन्द सब सुन्दर साज बजाते हैं,
कहे 'चन्दूलाल' सुन करके ख्याल सेवक निहाल हुए दर्शन प्रभु का पाते हैं ॥

१. दसवें पद में जिस मुकद्मे की ओर संकेत किया गया है, उसी की विजय का वर्णन है।
२. ढूँढिया सम्प्रदाय के लोग (स्थानकवासी सम्प्रदाय)
३. कृष्ण पक्ष

चौदह

प्रातस[1] में जिन मन्दिर जाऊँ, नित जाऊँ ।
कर अस्नान वसन शुध[2] पहरूँ फिर मुख को सविधाऊँ[3],
चार तिलक निज लाकर अंग में फिर प्रभु सम्मुख आऊँ,
सीस त्रै बार नवाऊँ ।
गाथ उचार[4] न्हवन[5] करवाऊँ नव अंग तिलक लगाऊँ,
रत्न जड़ित भूषण पहनाऊँ माल पुष्प गल पाऊँ,
धूप नैवेद्य चढ़ाऊँ ।
दो कर जोड़ लगाए समाधि चैत्य वंदन चित लाऊँ,
वन्दन कर प्रभु अस्तुति गाऊँ पुन पुन शीश झुकाऊँ,
बिघ्न भव भव के मिटाऊँ ।
जगवल्लभ जिन पार्श्वनाथ को कर कर भाव रिझाऊँ,
'चन्दूलाल' कटे लाख चौरासी बहुरि गर्भ नहीं पाऊँ[6],
यही पूजन फल चाऊँ[7] ॥

---

१. प्रातःकाल
२. शुद्ध
३. सावधान करूँ, प्रभु भजन का उच्चारण आरंभ करूँ
४. गाथा का उच्चारण
५. स्नान
६. पुनः गर्भ में स्थान न मिले, पुनर्जन्म न हो
७. चाहूँ, चाहता हूँ

पन्द्रह

सूरत पर वारी जाऊँ पारस स्वामी ।
कर्ण कुण्डल कर कंकन सोहे अद्भुत रत्न जड़ामी[1],
तुम तो विराजे कनक सिंहासन चौंसठ[2] चँवर ढुलामी,
श्याम वर्ण तन कोटि काम छवि नैन कमल मन भामी,
'चन्दूलाल' कहे ऐसी मूर्ति को बारम्बार प्रणामी ॥

सोलह

दीनन के प्रितपाल प्रभु तुम दीनन के ।
जिस दिन से प्रभु दर्शन कीना पाप पटल कट डाला,
शिवाँ देवी के लाडले नन्दन पशुअन के रखवाला,
भाल तिलक बैठे हेम सिंहासन गल पुष्पन की माला,
कर्ण कुण्डल हीरे मणि मंडित जगमग जोत जुआला[3],
'चन्दूलाल' प्रभु दीन तिहारो काट्यो कर्म जंजाला ॥

---

१. रत्न जड़ित
२. चौंसठ इन्द्र (दे० परिशिष्ट-३)
३. ज्वाला

सत्रह

मैं जिनवर से प्रीत लगाई करके पूजन ऐसो जन्म न पाऊँ जी।
प्रातस में तन शोधन करके फिर मन्दिर को जाऊँ,
हाथ जोड़ के करूँ वन्दना पाके दरस मैं सुभग गति पाऊँ जी।
प्रथम तोहे अस्नान करा कर फिर भूषण पहराऊँ,
धूप दीप नैवेद्य सुगंधी वरण वरण के स्वामी पुष्प चढ़ाऊँ जी।
घंटा छैने शंख बजाकर अद्‌भुत चँवर ढुलाऊँ,
हो अधीन फिर करके आरती मोती जड़ित शिर छत्र फिराऊँ जी।
लाख चुरासी[1] जून न भोगूँ यह पूजन फल चाऊँ,
'चन्दूलाल' प्रभु दास कोटले[2] बारबार तोहे सीस नवाऊँ जी॥

अठारह

जिन पूजन करि चित हित सेती बहुरि जन्म न पावे रे।
वन्द चरण जो सुरत करत नित, आदि ऋषभ का ध्यान धरत नित,
तेरे जन्म जन्म के पाप हरत नित, पलक देर ना लावे रे।
केसर अगर अपार सुचन्दन, धूप दीप नैवेद्य सुगन्धन,
नेमिनाथ के कर पद वन्दन, साते गति जावे रे।

१. चौरासी लाख योनियाँ
२. मालेरकोटला निवासी

घंटा और मृदंग बजावो, अक्षत पुष्प अभंग चढ़ावो,
जिन चरणों में ध्यान लगावो, जो सुख चावे[1] रे।
'चन्दूलाल' का कहा मान, सठ प्रभु पूज धर नमो[2] ध्यान,
ज्ञाता सूत्र का सुन बखान तेरो भरम मिटावे रे॥

उन्नीस

इस मन्दिर के बीच में अद्‌भुत होत बहार।
ताल मंजीरे बाजते ढोलक और खरतार[3]॥
मन्दिर में अद्‌भुत छवि छाई,
सोरण[4] कलश चढ़े मन्दिर पे झण्डी फरक सवाई,
घंटा और मृदंग बाजते पूजा रीति बनाई,
सब श्रावक प्रभु के गुण गावें तन मन धन चित लाई,
जैसे सिंह स्वरूप देख के अजा तुरत नस जाई,
ऐसे प्रभु के गुण गायाँ से पाप पटल कट जाई,
आचारंग की युक्ति देखकर तब यह बात सुनाई,
ज़रा मत भूठी जानो, पूजा में सब चित ठानो,
'चन्दूलाल' प्रभुदास जिन्हाँ यह भेद बखानो॥

१. चाह, इच्छा
२. नवकार मन्त्र
३. खड़ताल—एक प्रकार का वाद्य
४. स्वर्ण

बीस

सुन्दर साल सुहावना भादों मास विचार ।
सेवक पूजन कर रहे चौथ युक्त गुरुवार ।।
प्रभुजी तब मैं पूजन में सुरत करी,
प्रथम तोहे अस्नान कराकर तब भूषण पहराए हरी,
धूप दीप नैवेद्य सुगंधी संग में भेंट चढ़ाए धरी,
मोती जड़ित सिर सोहे छत्र और चौर सुहावे रत्न जरी[1],
श्याम वरण छवि कोटि काम सिर हेम मुकुट पर लगत झरी,
कटि हेम तड़ागी कर कंकन गल माल वस्त्र की खूब परी,
घंटा छैने बजें मंजीरे ढोलक शोभा अधिक भरी,
सब सेवक अर्ज़ करें हित से प्रभु भगती इन मन माँह भरी,
'चन्दूलाल' ने अस्तुति कही बना नहिं तेरी कृपा से देर परी,
करता हूँ वन्दन, सोहे सिर केसर चन्दन,
बार बार यह अर्ज़ दास के काटो फंदन ।।

---

१. रत्न-जड़ित

इक्कीस

कहा कहूँ छवि आज की मुझसे कही न जाए ।
मन्दिर में पार्श्व प्रभु बैठे खूब सुहाए ।।
बैठे खूब सुहाय पाप कट जाए दरस जो पावेंगे,
तिन्ह आठ रिद्ध[1] नव निद्ध[2] मिले जो पूजन करें करावेंगे,
जो निन्दा करते पूजन की वे भव भव गोते खावेंगे,
कटें जन्म जन्म के पाप सभी जो पूजन करें करावेंगे,
जो श्रावक बनवाएँ मंदिर सुरलोक स्वर्ग में जावेंगे,
कहे 'चन्दूलाल' मिलें चार पदारथ[3] जो प्रभु के गुण गावेंगे,
तुम साची जानो, धर्म में सब चित ठानो,
धर्म बराबर और चीज़ ना जग में जानो ।।

---

१. अणिमा, गरिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व तथा वशित्व नामक आठ सिद्धियाँ
२. पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील तथा वर्च्च नामक नौ निधियाँ
३. धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष

बाईस

पौष बदी तिथ अष्टमी सुन्दर वार सु भान।
सब श्रावक कट्ठे हुए श्री मन्दिर दरम्यान॥
श्री मंदिर दरम्यान प्रभु की सब श्रावक अस्तुति गावें,
सब सुन्दर साज बजाय रहे फिर होय खुशी दर्शन पावें,
फिर भगत वज़ीरी[1] खींच तान मण्डल पै थाप जल्द आवें,
कहे 'चन्दूलाल' तिथ पाँचों[2] को मंदिर के बीच सभी जावें,
नहीं देरी करते, प्रभु भक्ति चित धरते,
प्रभु किरपा से आज रंग मंदिर में वरते[3]॥

तेईस

शीतलनाथ अनाथ के दाता दृढ़ रथ राजकुमार,
भद्दलपुर जिन जन्म कल्याणक हेम वरण अवतार,
पाँच[4] कोमारपच्ची[5] वस कीने कियो मदन अरि छार,
लग्न धनुष सब दोष त्यागे गुण द्वादश लियो धार,

१. वज़ीरी मल : चन्दूलाल के साथी
२. द्वितीया, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी।
३. बरसते हैं
४. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार
५. सोलह कषाय तथा नव नो कषाय—दे० परिशिष्ट—२

शिखर समेत मुक्त पद पायो गुण गावत संसार,
दाहिनी तर्फ़ युग बिम्ब विराजे कुंथु[1] अरी[2] सुखकार,
श्रावक नित दर्शन को आवें नमन करें बहु बार,
अमृतसर दृढ़ आसन ठान्यो महिमा अपरम्पार,
'चन्दूलाल' दर्शन कर हरष्यो हरो नरकगति चार॥

चौबीस

वैसाख सुदी तिथ पंचमी बुद्धवार शुभ जान।
जलयात्रा को प्रभु चले अरेनाथ भगवान॥
अरेनाथ भगवान प्रभू जी समोसरण में राजते हैं,
प्रभुआगेध्वजामहेन्द्रचलेसंगअनहद बाजेबाजतेहैं,
कहीं ताल सारंगी बाजत जोड़ी[3] प्रभु सेवक गुण गावते हैं,
कहे 'चन्दूलाल' जो प्रभु गुण गावें मोक्ष-महल सुख पावते हैं,
मैं साच[4] सुनाता, सूत्र भी ऐसे गाता,
जो नर प्रभु को रटे पार भव से हो जाता॥

१. सत्रहवें तीर्थंकर कुंथुनाथ
२. अठारहवें तीर्थंकर अरिनाथ
३. तबला जोड़ी
४. सत्य

पच्चीस

अमृतसर के बीच में सुन श्रावक धनवान ।
फग्गू मल्ल महाराज पुन पन्ना लाल गुणवान ।।
पन्ना लाल गुणवान जिन्होंने जैन धर्म में चित लाया,
अरे नाथ महाराज प्रभु का मन्दिर अद्भुत बनवाया,
सोरण कलश चढ़ाए मंदिर पर ध्वजा महेन्दर लहराया,
देश देश में भेजी चिट्ठियाँ संघ सभी मिलकर आया,
पत्री[1] भेज बड़ौदे सेती गोकुल भाई मंगवाया,
तिन विध संयुक्त करी परतिष्ठा जैसे शास्त्र में फर्माया,
वैसाख सुदी षट् गुरुवार को अरेनाथ प्रभु पधराया,
कहे 'चन्दूलाल' उत्साह हुआ नर नार देखके हर्षाया,
जैकार बुलावें, प्रभु के दर्शन पावें,
सुर्जन हुए अनन्द देख दुर्जन घबरावें ।।

छब्बीस

अमृतसर के बीच नाथ श्री अरे विराजे जी ।।
द्वादश गुण प्रभु धार लिए, ठाराँ[2] दूषण जार दिए,

१. पत्र, चिट्ठी
२. अठारह

तीन ज्ञान घट जगे प्रभु तन निर्मल साजे जी ।
क्या कहूँ अद्भुत मंद्र[1] बना, ध्वजा दंड अति सुन्द्र[2] घना,
कलश सुनहरी झलके द्वार पर नौबत बाजे जी ।
देश देश से संघ चला, प्रभु चरणन में आन खला[3],
जब प्रभु दर्शन किए पाप सब छिन में भाजे जी ।
गजपुर में अवतार लिया, जिन सिमरयो भव से पार किया,
'चन्दूलाल' निज दास जान मम सारो काजे[4] जी ।।

सत्ताईस

अमृतसर के बीच में अरेनाथ जिनचन्द ।
दर्श तिन्हों का पाय के तन मन होत अनन्द ।।
तन मन होत अनन्द प्रभु की महिमा कहूँ सुना करके,
देश देश के श्रावक आए दर्श करें समधा करके,
कई ढोलक ताल बजावत हैं कई अस्तुति कहते गा करके,
कहे 'चन्दूलाल' गति कटें नारकी दर्श प्रभु का पा करके,
आ दर्शन पावें, कर्म के फन्द[5] मिटावें,
सन्मुख शीतलनाथ प्रभू जिनराज सुहावें ।।

१. मन्दिर
२. सुन्दर
३. आकर खड़े हुए
४. काज सारना, काम सँवारना
५. बंधन

अट्ठाईस

राधाबाई नाम है ज़ीरे के दरम्यान।
जैन धर्म चित लाइया गुणवन्ती धनवान ॥
गुणवन्ती धनवान बाई ने लोभ मोह निर्वार किया,
पार्श्व प्रभु का मंदिर रचाऊं दिल में यही विचार किया,
सब भाइयों के बीच बुलाके लालूराम मुख्तार किया,
लालूराम ने तन मन सेती क्या कहूँ जो उपकार किया,
कई वर्ष में त्यार कराया अति ऊँचा विस्तार किया,
शेरसिंह मिस्त्री ने उसमें क्या कहूँ जो उपकार किया,
मुल्क बीच पंजाब मन्दिर का नहिं ऐसा दीदार किया,
कहे 'चन्दूलाल' क्या कहूँ मंदिर में ऐसा काम अपार किया,
क्या करूँ बड़ाई, हाथ की बहुत सफ़ाई,
पाँच राज[1] हैं संग जड़ित कंचन करवाई ॥

---

१. मेमार

उन्तीस

प्रभु चरणों दरम्यान ध्यान अब सेवक ने लाया ।
जो नर प्रभु को रटे कटे तिस भव भव की माया,
जो शरणागत पड़ा जोड़ कर खड़ा छंद नहिं अड़ा करे निज किरपा
जिनराया;

राधाबाई नाम ज़ीरे में मंदिर बनवाया,
बीच में सोरण जड़ा कलश क्या चढ़ा गगन में खड़ा नगर के ऊपर
को छाया;

तिथि दशमी गुरुवार महोत्सव वर घोड़ा[1] थाया,
ध्वजा महेन्दर साथ बोलते गाथ कि दीनानाथ खुशी गुण ईश्वर
मन भाया;

बाजे बजते संग संघ सब देखत हर्षाया,
आये नगर से पार करें जयकार ध्वजा छनकार देख सब श्रावक
सुख पाया;

सूरी विजयानन्द जिन्होंने जिनमत प्रगटाया,
कहता 'चन्दूलाल' सुनो कर ख्याल रंगीली चाल आज पद जोड़
नया गाया ॥

---

१. प्रभु की सवारी

तीस

शहर ज़ीरे के बीच में राधाबाई नाम।
गुणवन्ती धर्मात्मा किए धर्म के काम॥
किए धर्म के काम श्राविका जैनधर्म चित लाया है,
चिन्तामणि महाराज प्रभू का मन्दिर खूब रचाया है,
कंचन कलश चढ़ाया ऊपर ध्वजा दण्ड रंग छाया है,
मंडप में जड़वा दिए शीशे सोरण बीच लगाया है,
सोरण की सब रची वेदिका चित्त देख हर्षाया है,
देश देश में भेज चिट्ठियाँ सकल संघ मिल आया है,
विधि संयुक्त करी परतिष्ठा जिम गणधर दर्शाया है,
मग्धर शुक्ल भृगु ग्यारस[1] दिन चिन्तामणि पधराया है,
सुनो चार[2] में देवलोक का मोटा पुण्य बढ़ाया है,
कहे 'चन्दूलाल' हुआ बड़ा महोत्सव दुर्जन देख लजाया है,
सुन्दर छवि छाई, देखते लोग लुगाई,
मुल्क बीच पंजाब धन्य है राधाबाई॥

१. एकादशी, मार्गशीर्ष, १९४८ वि०
२. चारों दिशाओं में, संसार में

इकतीस

बाई ने मन्दिर बनवाया ज़ीरे नगर के बीच।
राधाबाई नाम दाम जिन धर्म अर्थ लाया,
पैंतीस गज का तूल मूल से ऊँचा रखवाया,
सोरण कलश चढ़ाय बीच में सोरण जड़वाया,
कंचनमयी सब रची वेदिका मंडप रंग छाया,
तीन वर्ष में किया त्यार पण[1] अटकन नहीं पाया,
ऐसा उद्यम किया करे कोई क्या नर जाया,
ज़ीरे गोकुलचन्द बड़ौदा से कर विनती मँगवाया,
तिम परतिष्ठा करी सूत्र जिम गणधर दर्साया,
साल एक नव वेद अष्ट सित मघसिर शुभ[2] छाया,
तिथ ग्यारस भृगुवार पधारे चिन्तामणि राया,
देश देश से चला संघ कर दर्शन हर्षाया,
'चन्दूलाल' मतिमंद वंद पद नीका सा गाया॥

१. परन्तु (गुजराती शब्द)
२. मार्गशीर्ष, शुक्ल पक्ष, एकादशी, सं० १९४८ वि०

बत्तीस

हे सखि शशिवत परकासे री चिन्तामणि प्रभु पार्श्व नमूँ ।
श्याम वरण सुखकरण मनोहर दुख भव भव नासे री,
पार्श्व प्रभु चिन्तामणि सारिखो कोऊ देव न भासे री,
देश देश के श्रावक आये दर्शन करके हुलासे[1] री,
दुख भंजन सेवक मनरंजन ज़ीरे नगर निवासे री,
चिन्तामणि प्रभू पार्स परस के जाऊँ किमही निरासे री,
दास 'चन्दू' माँगत कर जोरी भव भ्रमणन मिट त्रासे री ॥

तैंतीस

जिया तू कर ले दर्शन आज भवी कर ले दर्शन साचे भगवान ।
श्याम वरण तन रत्न समान,
और देव उड़गन जग में चिन्तामणि भान ।
ठाराँ[2] दोष त्यागे गुण द्वादश सुपछान,
सीस मुकुट पग उरग निसान ।
कुगुरु कुदेव संगत करी विषपान,
चार गति बीच भ्रमया होई न कल्याण ।
चिन्तामणि पारस निरख्यो ज़ीरे दरम्यान,
दास 'चन्दू' दर्शन करके मिटयो अज्ञान ॥

१. उल्लसित हुए
२. अठारह दूषण

चौंतीस

पार्श्व प्रभु आयो तोरी शरण जी ।
शीश मुकुट कर कंकण साजे माल रत्न गल कुण्डल करण[1] जी;
रैन दिवस तुमरे गुण गाऊँ जब लगि श्वास घट यही परण[2] जी;
होश्यारपुर प्रभु आसन ठान्यो नर नारि मिल पूजें चरण जी;
'चन्दूलाल' निज दास जानके काटो सकल दुख जन्म मरण जी ॥

पैंतीस

श्री जिन सफनी पार्श्व प्रभु के चरण कमल पर बलिहारी ।
होशियारपुर हुआ महोत्सव कहूँ कथा सुनिए सारी ॥
होशियारपुर मुल्क बीच पंजाब नाम है अधिक शहर,
बहुत बावड़ी बाग बगीचे आस पास चोए[3] की लहर ।
तिसी शहर के बीच सेठ इक जैन धर्म का अनुरागी,
गुज्जर मल्ल सुजान नाम बहु दान करे अति बड़ भागी ।
मन्दिर पार्श्वनाथ बनाऊँ यह मनशा मन में धारी ॥
शुभ दिन शुभ घड़ी देख लग्न शुभ मंदिर की नींह[4] रखवाई,
बहुत वर्ष में त्यार हुआ गज़ तीस तूल की ऊँचाई ।

१. कर्ण—कान
२. प्रण
३. चो, बरसाती नदी
४. नीव

नज़र पड़े छः सात कोस से सोरण सेती शिखर मँढ़ा,
चार कुर्सियाँ सोरण की ध्रुव दण्ड स्वर्ण का कलश चढ़ा।
स्वर्ण रत्नमयी रची वेदिका बीच करी मीनाकारी॥

आसपास कई मकाँ बने पुन मण्डप में अति रंग छाया,
जिम हरिमन्दिर[1] अमृतसर में उसी क़ता[2] पर बनवाया।
प्रभु किरपा से हुआ सम्पूर्ण देख सेठ हर्षाया है,
देश देश में भेज चिट्ठियाँ सकल संघ बुलवाया है।
गोकुल सेठ बुलाय जल्द परतिष्ठा की कीनी त्यारी॥

देश देश से मिला चतुर्विध संघ नगर में आया है,
तन मन में आनन्द बढ़ा जब दर्श मन्दिर का पाया है।
माघ सुदी तिथ चौथ भौम[3] जल यात्रा का उत्सव कीना,
जिसने ऐसा उत्सव देखा सफल हुआ उसका जीना।
रथ बग्घी पुन फील पालकी घोड़ों की अति छवि न्यारी॥

ध्वजा महेन्दर संग विराजे तरह तरह की फुलवारी,
अनहद बाजे बजें अगारी जय जय बोलत नर नारी।
'चन्दूलाल' क्या वरणूँ महिमा रंग अनेक रचाए जी,
बीच फिराए नगर पार्श्व पुन मन्दिर में पधराए जी।
साल एक नव वेद आठ सित माघ पंचमी ज्ञ वारी[4]॥

---

१. स्वर्ण मन्दिर, दरबार साहिब
२. ढंग
३. माघ, शुक्ल पक्ष, चौथ, मंगलवार
४. माघ, शुक्ल पक्ष, पंचमी, बुधवार, १९४८ वि०

छत्तीस

वासु पूज्य सिमरूँ सदा काटें भव भव फन्द।
होश्यारपुर के देख के तन मन हुआ अनन्द॥
नगर में देख जैन मत का मन्दिर,
छः सात कोस से नज़र पड़े चौतरफ़ा चढ़ा सोरण[1] सुन्दर,
इक ध्वजा महेन्द्र[2] विराज रही और बंधी बहुत बारा बन्दन[3],
मैं शोभा इनकी क्याय कहूँ क्या खूब मकान बने अन्दर।
तन मन हर्षाया, दरश जब प्रभु का पाया,
गुज्जर मल्ल सुजान जिन्हों[4] मन्दिर बनवाया॥

होश्यारपुर बीच में गुज्जर मल्ल सुजान।
प्रभु भक्ति निसदिन करें सर्व गुणों की खान॥
नित्य करे व्रत दान भली तिनके घर बीच सती कामन[5],
प्रभु भक्ति में परवीन[6] बड़ी जिन किया प्रेम से उद्यापन[7],
करके सलाह फिर भाइयों से पत्री[8] ढाई सौ छपवामन[9],
जिस ग्राम नगर में थे श्रावक झट सन्मुख उनके भिजवामन,
जब पढ़ी पत्रिका भाइयों ने हुए बहुत खुशी झटपट आमन[10]॥

---

१. स्वर्ण
२. इन्द्रध्वज
३. बन्दनवार
४. जिन्होंने
५. कामिनी
६. प्रवीण
७. व्रत-उपार्जन
८. पत्र
९. छपवाते हैं
१०. आते हैं

गुजरां वालाई प्रधान रामनगर से आन चिन्तामणि महाराज
जित सुन्दर सुहाँवदे[1],
पट्टी गुजरात आए अहमदाबाद से सुहाए औ' श्रावक अनेक
जंडियाला सेति आँवदे[2],
कोटला मालेर[3] लुधियाना ते[4] अम्बाला वाले आए हैं
जलंधरों[5] जो भक्त कहाँवदे[6],
ऊना पपनाखा तें मुकेरियाँ दसूहे वाले और फगवाड़ा अमृतसरों
धाँवदे[7],
कोटली कसूर से मयानी वे दो वाल सेती आए हैं बनौली वाले
खुशियाँ मनाँवदे[8],
शंकर दिवाला गढ़[9] आए स्यालकोट वाले टाँडा सुल्तानपुर
ऐहमे सेती आँवदे,
उडमड़ लाहौर ज़ीरा संभडेईवाल वाले ऋषड़ा नकोदर
सनखतरा सु थाँवदे[10],
दास 'चन्दूलाल' खुशीराम गंगाराम आए गुणी तिनके तो गुण
नहिं कहे जाँवदे[11] ॥

१. सुहा रहे हैं, शोभित हो रहे हैं
२. आ रहे हैं
३. मालेरकोटला
४. और, तथा
५. जालंधर से
६. कहलाते हैं
७. धा कर आना, शीघ्रता से आना
८. मना रहे हैं
९. गढ़दीवाला
१०. स्थानों के (रहने वाले)
११. जाते हैं (गुण कहे नहीं जाते हैं)

तिमि चतुर्संघ का कट्ठ[1] हुआ जिमि चढ़ी घटा मानो सावन,
करते प्रभु पूजन रीति से सब साज बजें अस्तुति गावन,
कहे 'चन्दूलाल' उत्साह हुआ नर नार देख के हर्षावन।
सब को प्रभु तारे, कुगुरु[2] झट दूर निवारे,
जैन धर्म के आज प्रेम से बजें नगारे ॥

होशियारपुर बीच में पिशौरी मल्ल धनवान।
दोऊ पुत्र तिस घर हुए कृपा करी भगवान ॥
जिन्होंने जैन धर्म में चित लाया,
इक नत्थूमल हैं बड़े भ्राता फत्तूमल्ल छोटे जाया,[3]
कार्तिक शुदी तिथ ज्ञानपंचमी का उत्सव करना चाया,[4]
जेठामल भाई अमदाबाद[5] से भेज पत्रिका बुलवाया,
तिन्ह सुन्दर आन रची वेदी ज्यों जैन शास्त्र में फर्माया,
तिथि पंचम को समसरण[6] बना बिच पार्श्वनाथ प्रभु पधराया,[7]
क्या सुन्दर बाजे गाजे से फिर नत्थूमल्ल घर ले आया,
दिए वस्त्र पात्र चाँदी के दिए फिर करके वन्दन हर्षाया,
प्रभु सेवक अस्तुति गाये रहे नरनार देख के सुख पाया,
फिर प्रभु को नगर फिरा करके पुनि उसी मंदिर में धर्राया।[8]

१. इकट्ठ, एकत्रित, समूह
२. पूज, जैनमत का एक सम्प्रदाय
३. पुत्र
४. चाहा
५. अहमदाबाद
६. समोसरण, समवसरण
७. पधारे, प्रवेश कराया
८. धरे, रख दिए गए, मूर्ति रख दी गई

मैं अस्तुति गाई, सुनो साधर्मी भाई।
मंगल हुए अनेक छवि वरणी न जाई॥

सिमर शान्ति प्रभु आनन्द दाता।
जिन्हों के नाम से नर मोक्ष पाता॥
नगर होश्यारपुर सुन्दर कहावे, बसें बहु जाति न कुछ पार आवे।
बसें श्रावक वहाँ प्रभु के प्यारे, करें पूजा दया के पुंज भारे।
आई पर्यूषणा[1] भादों महीने, प्रभू-मन्दिर में मंगलचार कीने।
तिथि भादों सुदी दुतिया जो आई, प्रभू जी की समोसरणा रचाई।
समोसरणा में जिन पार्श्व पधारे, बुलावें प्रेम से श्रावक जयकारे।
प्रभू आगल[2] ध्वजा माहेन्द्र साजे, सुमत आनंद कुमत तिस देख लाजे॥
नगर के बीच प्रभु जी को फिराया, बजे बाजे अनेकाँ रंग छाया।
प्रभू सेवक मुखों[3] समझाय बोले, कोई छत्तार[4] कोई नर चौर[5] डोले।
नगर के बीच प्रभु जी को घुमाये, सभी मिलकर के चोआ[6] पार आए।
जो डेरे बावड़ी ऊपर लगाए, कनातें तान प्रभु पूजन कराए।
दर्व[7] अक्षत प्रभु आगल चढावें, करें अस्तुति अति आनंद पावें।
कहूँ छवि आज क्या जिनराज जी की, दई विधि से प्रभु नव अंग टीकी[8]।

---

१. पर्युषणा, तीर्थंकर-पूजा
२. आगे
३. मुख से
४. छत्र
५. चँवर डुला रहे हैं
६. चो, पहाड़ी नाला
७. द्रव्य
८. टीका, तिलक

करा पूजन सभी नगरी को आए, प्रभू मंदिर में जिन पार्श्व टिकाए।
श्रवन होश्यारपुर में यह बनाया, विजय आनन्द[1] चरणी ध्यान लाया।
कहे 'चन्दूलाल' जिन चरणों के चेरा, नगर मालेरकोटला बीच डेरा॥

होशियारपुर बीच में देखा खूब बजार।
सुन्दर रौनक छा रही बैठे साहूकार॥
बणज[2] लाखों का रात दिन तोर[3] रहे,
यहाँ तरह तरह का माल कटे दिन रात बहुत ही सोर[4] रहे,
दिन रात उड़ीकें[5] गाहकों को जिमि चंदा चारु चकोर रहे,
कहे 'चन्दूलाल' यहाँ सोई तरे जो प्रभु चरणों में डोर रहे।
मैं तुम्हें सुनाया, सूत्र में गणधर गाया।
सूरी विजयानन्द बीच ठाणांग सुनाया॥

सब श्रावक सुन लीजिए करके ज़रा विचार।
अब चोआ है लाँघना बोलो सब जयकार॥
प्रभू के चरणन में चित लाओ तुम,
यह नाम प्रभु का है बेड़ी ले सहज भाव तर जाओ तुम,
अब पार चोये से चल करके प्रभु पूजन आज कराओ तुम,
कहे 'चन्दूलाल' यह धन्य घड़ी जो दर्श प्रभु का पाओ तुम।
जैकार बुलाओ, प्रभू चरणन चित लाओ,
कर पूजन जिनराज आज सगरे सुख पाओ॥

---

१. सूरि विजयानन्द, प्रसिद्ध नाम आत्माराम
२. वाणिज्य
३. चला रहे हैं, कर रहे हैं
४. शोर
५. प्रतीक्षा करते हैं

लेय प्रभू महाराज को आ चोये से पार।
रल मिल पहुँचे बावड़ी बोलत हैं जयकार॥
आन सतरंजी[1] झटपट बिछवाई,
क्या रंग रंग की लाई[2] कनातें सुघड़ चाणनी[3] बिछवाई,
प्रभु बिम्ब मनोहर बीच धरे सिर ऊपर चौर ढुले भाई,
कहीं शंख दुंदुभी बजे नगारे समोसरण की छवि छाई,
कौलाराम पूजन करवाते जैसे शास्त्र में फरमाई,
कहे 'चन्दूलाल' प्रभु वन्दन करके बाद आरती उतराई।
वादित्र[4] बजावें, प्रभु को सीस नवावें,
हुए बहुत आनन्द सभी जयकार बुलावें॥

तिथ दशमी भादों बदी बुधवार शुभ जान।
महावीर जन्मन कथा आई कल्प दरम्यान॥
पूज्य जी गाथा खोल[5] सुनाए हैं,
आषाढ़ सुदी छठ आए गर्भ में चौसठ इन्दर आए हैं,
चैत बदी तेरस दिन जन्मे नर नारी सुख पाए हैं,
सिद्धार्थ राजा त्रिशला माता दिल में खुशी मनाए हैं,
पीत वसन केहरी पग लक्षण तीन भुवन यश छाए हैं,
क्षत्री कुण्ड में दोक्षा लीनो दो उपवास कराए हैं,
क्या बारह वर्ष छदमस्थ रहे प्रभु तीन ज्ञान घट भाए हैं,

१. बिछौना, बड़ी दरी
२. लगाई
३. चांदनी, फ़र्श, दरी
४. बाद्य, साज़
५ विस्तार पूर्वक

पद्मासन कर पावापुरी में मोक्ष महल को धाए हैं,
यह कथा कल्प में आई थी सुन सुन सेवक हर्षाए हैं,
सब रल मिल मंगलचार करें औ गोले[1] बहुत लुटाए हैं,
कुमत देख लरज़ाए[2] हैं,
कहे 'चन्दूलाल' प्रभु के सेवक मिल जै जैकार बुलाए हैं।
दिल खुशी मनाई, देखते लोग लुगाई।
गुरु किरपा से आज ध्वजा की अस्तुति गाई॥

सैंतीस

मन सिमरो विमल प्यारा वह तो सब जीवन सुखकारा।
नाथ विमल की सुनिए बाता, तीन लोक जिनका यश गाता,
नर नारी देवन मन भाता, जो सिमरे सोई सुख पाता;
नाथ विमल अवतार तेरवें[3] अष्ट कर्म मल जारी,
केवल ज्ञान छिनक में पाया बार बार बलिहारी;
शोल संयम से प्रोत लगाई जीव दया चित धारी,
पद्मासन कर गए मुक्त को महिमा अपरम्पारी;
तातें चार महाव्रत धारा॥
नाथ विमल सबके सुखदाई, जिन चरणों की शरण तकाई[4],
रचूँ श्रवण सुनिए सब भाई, चौथ शुक्ल रवि भादों आई;

१. नारियल तोड़कर बाँटे हैं
२. कपित हुए हैं
३. तेरहवें
४. आशा की है

सात पयूषण पूरन होए आज आठवाँ आया,
सब श्रावक मिल पोसो[1] कीनी प्रभु चरणन चित लाया;
कथा कल्प फिर एक बजे सुन करी चैत्य पर बाड़ी,
नंगे पाँव चले मन्दिर को बाजा बजे अगाड़ी;
चेत वन्दना करन प्रभु को जिन मन्दिर में आए,
कर में पत्ती[2] बगल रजोहणा[3] साधू रूप बनाए;
सब पीत वसन तन धारा ॥
चेत वन्दन प्रभु को सब करते, चरण कमल प्रभू के चित धरते,
जै जैकार मन्दिर में करते, देख कुमत निज मन में डरते;
जो जो श्रावक मन्दिर आए कहूँ तिन्हों का नाम,
रात दिनों वे नाम प्रभु का रटते आठों याम;
गुज्जर मल्ल इक सेठ नगर में जैन धर्म के वेता,
सोरण मंदिर बना नगर में जीव दान बहु देता;
देवराज सुत जान तिन्हों के सब गुण में परवीन,
मेहरचन्द भ्राता के बेटे जैन धर्म में लीन;
नत्थूमल्ल इक भगत प्रभु को प्रभुदयाल गुण भीनो,
कौलाराम नत्थू चंद मुन्नू आए भ्राता तीनों;
संग आयो वसन्ता तारा ॥
हेमराज लाभाचन्द आए, म्हानांराम देवीचन्द धाए,
हंसराज सुन्दर सुख थाए, पालाराम साधू हर्षाए;
मोहकम चन्द फलौदी वाले सेठ मंदिर में आए,

१. पर्युषणा, तीर्थंकर-पूजा
२. मुख पट्टिका
३. रजोहरण, ऊन का गुच्छेदार ओघा

लघु दीर्घ मिल दो कर जोड़ी प्रभू चरणन चित ला।
चेत वन्दना कर प्रभु जी को पासरे[1] बीच पधारे,
जन्म सफल अपनो कर माना बोलत हैं जयकारे;
आत्मानन्द आनन्द विजय मुनि जिन यह धर्म बताया,
'चन्दूलाल' तिनकी किरपा से झटपट छंद बनाया;
रहता कोटले नगर मंझारा ॥

अड़तीस

चलो भई आज पार्श्व गुण गावें ।
दूज तिथि भादों उजियारी प्रभु तन अंगिया[2] रचावें,
समोसरण प्रभु राजत भ्राजत देख दर्श फल पावें,
ध्वजा महेन्द्र चले प्रभु आगल घुँघरू शब्द सुनावें,
अष्ट द्रव्य से पूजन करके भव भव फन्द नसावें,
'चन्दूलाल' प्रभु के गुण गावो कर्म कठिन मिट जावें ॥

१. उपाश्रय
२. वस्त्र

उन्तालीस

पत्र प्रभाकर जैन में जो लिख्या दस्तूर ।
सभी संघ से बेनती करें सभी मंजूर ॥
पत्र मासिक में लिख्या है जैसा,
धर्म काज के बिना मुफ्त में खर्च करो मत पैसा,
जो भाई दर्शन को आवे करो काम तुम ऐसा,
जैसा भोजन हो घर अन्दर सदा खिलावो वैसा;
मत करो मिठाई, पिछली रस्म हटाई,
सभी संघ के बात आज यह मन में आई ॥
प्रतिष्ठा ऊपर तीन दिन उद्यापन पर दिन तीन ।
दीक्षा ऊपर एक दिन सरस मिठाई कीन ।
और मत किसी काम में कीजे,
धर्म काज में मिलनी[1] आदिक ना दीजे ना लीजे,
जो मेहमान किसी का आवे कपड़ादिक नहीं दीजे,
कह 'चन्दूलाल' लड़के लड़की बिन दम्रो दाम मत तीजे;
सुनिए सब भाई, संघ बन्दी[2] करवाई,
तेई सहर की इति बात पर खड़ी उगाई[3] ॥

---

१. भेंट के समय दिया जाने वाला धन
२. मनाही
३. उगाहना, उगाही

चालीस

भक्त वज़ीरी मल्ल जो अम्बाले के बीच ।
मिल कर शादी राम से रहे धर्म तरु सींच ॥
सदा पारस प्रभु के गुण गाते हैं,
दिन रैन प्रभु की भक्ति के वे सुन्दर भजन बनाते हैं,
तिथ पंचम आठे चौदस को जा भजन मंदिर में गाते हैं,
कहे 'चन्दूलाल' गुरु किरपा से शठ कुगुरों[1] को धमकाते हैं;
मन्दिर में आवें, प्रेम से जिन गुण गावें,
जनकू पन्ना हेमराज जिनके संग आवें ॥

इक्तालीस

सुपारस नाथ को वन्दन करूँ कर जोड़ चरणन में ॥
अहो धन धन[2] बनारस को ये धन परतिष्ठ राजा को,
ये धन धन मात पृथ्वी को रतन सी कोख से जनमें ।
अच्युतपति हुक्म जब कीनो मिले सुर इन्द्र तब चौंसठ,
किया उत्सव जन्म दिन को बजी जयकार त्रिभुवन में ।
तजा दूषण अठाराँ को लिए गुण धार शुभ बारां,
छवी तनु श्वेत की ऐसी शशी जिम कोटि उडगन में ।

---

१. कुगुरुओं, मूर्ति पूजा विरोधी
२. धन्य धन्य

सुभग श्रावक अम्बाले के कियो मंदिर जिन अति सुन्दर,
चतुर्विध संघ कर दर्शन हुआ आनन्द तन मन में।
संवत् शुभ एक नव ऊपर लिखूँ शुभ पाँच पुन दो को[1],
सुदी अगहन शशी शारद कियो स्थापन इसी सन में।
कहे जिनदास 'चन्दूलाल' करे जो पार्श्व जिन दर्शन,
लहे भविजन पदार्थ चार कटें अघ कोटि इक छन में॥

बयालीस

जप ले नर श्री जिन सफणी पास[2], तेरी सकल फलेगी मन की आस।
प्रभु नगर बनारस जन्म ठाम[3], रख्यो तात प्रतिष्ठ पार्श्व नाम,
करें नाटक चौंसठ इन्द्र हास।
तजें ठाराँ दोष गुण बाराँ धार, भाष्यो स्याद्वाद मत जैन सार,
वश मोक्ष कर्म दल कीनो नास।
तजो कुगुरु संग करो सुगुरु सेव, गहो सत्य शील भजो पार्श्व देव,
मिटे जन्म मरण का छिन में त्रास।
प्रभु नगर अम्बाला में कीना वास, करूँ चरण सेव जो लौं घट में श्वास,
धरे ध्यान 'चन्दू' तव दास दास॥

---

१. संवत् १९५२ वि०
२. पार्श्वनाथ
३. स्थान

तैंतालीस

जब देखे पारस नाथ तप्त मिट गई तन की सारी।
भटकत चहुँ दिसि फिरा पाप मैं कीने अति भारी,
लगा न कुछ भी हाथ उमर बहु विषयों में गारी,
सतगुर पूरन मिले ज्ञान की औषध दृगकारी,
पाँच ऋपु को जीत भए तुम जग में अवतारी,
चौंसठ इन्द्र खड़े द्वारे पर बोलत जयकारी,
अम्बाला दरम्यान पूजते हित से नर नारी,
'चन्दूलाल' मति हीन चरण की शरण लई थारी[1]॥

चवालीस

पत्री[1] पहुँची आप की तिथि सातें के रोज।
वखत शाम को थी मिली देखी सगरी खोज॥
लिखा जो उसमें यह पाया,
गोपी राम अनन्त राम ने जल्द तुझे है बुलवाया,
लेकर वह पत्री जल्द चला सब भाइयों के सम्मुख आया,
हम सभी दिवाली बाद चलेंगे सब भाइयों ने फर्माया,

---

१ तुम्हारी
२. पत्र, चिट्ठी

मुझे हुई बिमारी चश्मों[1] की दिन दस लगि होश नहीं आया,
कुछ अरसे में आराम हुआ फिर कर त्यारी झटपट धाया,
मुझे वखत तुरण[2] के भाइयों ने सब यह जवाब है बतलाया,
यह काम काज जग के मुश्किल नहिं अब हम से जाता जाया,
मैं सुन जवाब ख़ामोश हुआ फिर दिल अपने में घबराया,
कहे 'चन्दूलाल' फिर चला अकेला दर्शन को चित हर्षाया।
सिर कूके यम है, सार इक वस्तु धर्म है,
रक्षपाल जिनके प्रभु जी तिन्हें किसका गम है ॥
लुधियाना में आय के स्टेशन पहुँचा जाय।
फिर बाबू से टिकट दो झटपट लिये मंगाय ॥
रेल पर करी चढ़न की तैयारी,
चौंते[3] से नीचे जाय गिरा फिर लगा जख्म कर पे भारी,
तन मन की ना कुछ होश रही ना टरे कर्म की गति टारी,
चढ़ अमृतसर में आ पहुँचे वहाँ लगे करन फिर अस्वारी,
वहाँ फग्गू मल्ल महाराज रामचंद मिले भ्रात्री उपकारी,
उस दिन मुझको नहिं तुरण दिया फिर करी दवा झटपट जारी,
दिन अगले कुछ आराम हुआ झट चलने की सुरती धारी,
दो दिवस बीच यहाँ आ पहुँचा यह साच बात मैं उच्चारी,
जब दर्श किए मुनिराजों के तन मन की तप्त मिटी सारी,
कहे 'चन्दूलाल' ऐसे मुनियों के बार बार मैं बलिहारी।

---

१. आंखों की
२. चलने के समय
३. चबूतरे से

मुनि हुए उतारे, धन्य हैं सेवक थारे,
धन्य मुनी महाराज धन्य हैं गुरु तिहारे ॥

पैंतालीस

मन सिमरो पार्श्व जिनन्दा, वह तो मात वामा सुखकन्दा।
नगर बनारस जन्मे जिनवर, बजत बधाई आशुसेन घर;
उरज लछन[1] प्रभु चरण मनोहर, संग रहत जिन आठों गणधर;
श्याम वर्ण भक्तन हितकारी छत्र ढुले सिर जाके,
पद्मासन कर मोक्ष पधारे क्याय कहूँ गुण ताके ॥
महावीर अवतार अन्त को जिन शासन सरदार,
पावापुरी में मोक्ष पधारे गुण गावे संसार ॥
गौतम आदिक गणधर ग्याराँ पाठ पाठ पर राजे;
विजय सीख गुणी मुनी विजय जी[2] पाठ तिन्हों के गाजे;
बुद्धि विजय गुण पाट[3] विराजे जग में कला दिखाई,
तिनके सूरी पद धारक प्रगटे हैं आत्माराई;
जिन कर्म कठिन किए मन्दा ॥
आत्माराम आनन्द विजय मुनि, हूँ बालक क्या उनके कहूँ गुण,

---

१. लक्षण
२. श्री बुद्धि विजय के शिष्य श्री आनन्द विजय
३. तपगच्छ के पट्टधर

जैन सूत्र जिन काढ़े चुन चुन ।
आचारंग ठाणांग भगवती जैन सूत्र मन भाए,
भाष्य मूल टीका निर्युक्ति सीधे अर्थ सुनाए;
भाव दर्व दोऊ पूजन प्रभु की सूत्तर में बतलावें,
जो नर उन संग बहसाँ करते सूत्तर खोल दिखावें;
कोई न वादी सन्मुख आवे भाग जाए गुण सुन के,
जिन भक्ति में संशय पूछ्यो खोल दिए पट उन के;
साचा साचा धर्म बताया कपट न राखी काई;
पार्श्वनाथ प्रभु जी की पूजा देश देश करवाई;
मुनि काट्यो कुगुरु मत फंदा ॥
देश देश मुनि विचरण लागे, मंगलाचार होवण मुनि आगे,
पाँच रिपु जिन दिल से त्यागे, श्रावक सुन मुनि के गुण जागे;
नगर नगर में धर्म बढ़ावें काटें सकल जंजाल,
वीतराग की आज्ञा पालें हैं लालों के लाल;
दो साधू उनके अति ज्ञानी हेमगनर में आए,
पीत वसन डंडा कर पाति अद्भूत रूप सुहाए;
सब श्रावक मिल ल्याए नगर में कर दर्शन सुख पाए,
सर्व सभा में यूँ मुनि सोहें शोभा कहीं न जाए;
जैसे निशि उडगन में चन्दा ॥
प्रातस में मुनि सूत्र सुनावें, सब श्रावक सुनने को आवें;
षट् शास्त्र परमाण[1] घटावें, उद्योत विजय मुनि नाम सुहावें;
हीरा मल्ल साह मोहन लाल जी ताराचंद गुणवान,
गोपीनाथ अनन्तराम साह प्रेमचन्द सुर ज्ञान;

१. प्रमाण

हमीरचन्द परमा गुरदित्ता रलाराम मतवारे,
मूलाराम महेश चन्द ते नेपालाल गुण भारे;
गोबिन्दराय ते कालूमल्ल जी जगन्नाथ चल आया,
सुन्दर मंदिर रचा नगर में जीव दया चित लाया;
हेमराज ईदाचंद शंभू अभी नकोदरि आए,
मल्हाराम ते बेलीराम जी दीनानाथ हर्षाए;
सुन श्रावक आनन्द हुए सब बोलत हैं जयकारा,
कर दर्शन आनन्द भयो चित भाज गया दुख सारा;
'चन्दूलाल' तिनकी किरपा से झटपट कीर्ति गाई,
दास जानके किरपा करनी तुमरी शरण तकाई;
मेरो लिपट्यो मन मकरंदा ॥

छयालीस

सिमर नर धर्म नाथ अवतारी ।
वे तो सब जीवन सुखकारी ॥
हेमनगर प्रभु राजत भ्राजत पूजत सब नर नारी,
दाहिने ऋषभ पारस प्रभु सोहे निज सेवक उपकारी,
वामे सुविध जिनेश्वर चन्दा कोटि रवि उजियारी,
सन्मुख शांतिनाथ सुहंकर महिमा अपर अपारी,
नेमिनाथ प्रभु अजित जिनंदा सुमत जगी तन भारी,
अद्भुत बिम्ब विराजत एते सनखतरे मंझधारी,
धर्मनाथ महाराज प्रभू का मंदिर खूब रुचारी,

सब श्रावक दर्शन को आवें हो रही मदवत[1] जारी,
दर्शन कर आनन्द भयो चित तप्त मिटी मुझ सारी,
'चन्दूलाल' मति हीन दीन प्रभु चरणन पर बलिहारी ॥

सैंतालीस

हेमनगर के बीच में धर्मनाथ जिनचन्द ।
दर्श जिन्हों का पाय के तन मन हुआ अनन्द ॥
प्रभू की उपमा[2] कहूँ सुना करके,
देश देश के श्रावक आए दर्श करें सब आ करके,
कई ढोलक ताल बजावत हैं कई अस्तुति कहते गा करके,
कहे 'चन्दूलाल' गति कटे नारकी दर्श प्रभू के पा करके,
जब दर्शन पाए, कर्म के फंद मिटाए,
सन्मुख शांतिनाथ प्रभु जिनराज सुहाए ॥

१. नशा सा आने लगा है
२. शोभा, महिमा

अड़तालीस

सनखतरे के पास ही नग्गर नारोवाल ।
सब श्रावक रल मिल चले गैंडामल चले नाल[1] ॥
प्रभू का आ दर्शन झट पाया है,
फिर दो कर जोड़े करी वन्दना दर्श गुराँ का पाया है,
जब दर्श किए मैं भाइयों के तन मन मेरा हर्षाया है,
'चन्दूलाल' गुरु की किरपा से झटपट यह छंद बनाया है,
मत्त मेरी हीनी, बात रच दी रस भीनी,
सतगुर हुए दयाल बुद्धि हिरदे में दीनी ॥

उन्चास

तिथि दशमी कार्तिक सुदी भौमवार शुभ जान ।
सब श्रावक कट्ठे हुए श्री मन्दिर दरम्यान ॥
प्रभू के सब श्रावक गुण गावत हैं,
कोई चैत्य वन्दना पढ़े स्तोत्र कोई अद्भुत साज बजावत हैं,
श्री धर्मनाथ सन्मुख हैं स्वामी नायक मूल कहावत हैं,
दाहिने श्री चंदा सुविध जिनेश्वर कोटि सूर्य शरमावत[2] हैं,

१. साथ, संग
२. जिनकी मूर्तियों की शोभा के सामने कोटि सूर्य लज्जित हो जाएँ ।

वामें श्री पार्श्व ऋषभ देव के दर्श किए दुख भाजत हैं,
कहे 'चन्दूलाल' निसदिन प्रभु सेवक चरणन शीश नवावत हैं,
करता हूँ वन्दन, चढ़े सिर केसर चन्दन,
बार बार यह अर्ज़ दास के काटो फंदन ॥

पचास

मुनि सुवृत के देखे जगी तन में सुमत भारी ॥
प्रभु तन श्याम मुख नीको, भाल सोहे केसरी टीको[1],
लगे सन्मुख शशी फीको, है ऐसी जोत उजियारी ।
मुकुट कंचन का सिर सोहे, मूरत ऐसी जगत मोहे,
नमूँ बहुबार प्रभु तोहे, हुए जग बीच अवतारी ।
जगत में पूजें मुनि देवा, करें तुम चरण की सेवा,
असुर सुर पायो न भेवा[2], जिनन्दा धन्य गति थारी ।
आसन नारो[3] विच स्वामी, भए जग में मुकत गामी,
खबर निज दास की पामी[4], चरण की शर्ण चित धारी ।
कहे 'चन्दूलाल' तुम दासा, करो पूरन मेरी आसा,
ना होवे जगत में हासा[5], हरो भव पीड़ प्रभु सारी ॥

---

१. टीका, तिलक
२. भेद, रहस्य
३. नारोवाल
४. पाना, ध्यान रखना
५. परिहास

इक्यावन

मुनि सुवृत्त महाराज आज चल दर्शन को आया ।
दसों दिसा में फिरा देव कोई ऐसा ना पाया,
मिले देव के देव तिमिर सब देखत[1] उठ धाया,
तजे अठाराँ दोष जगे गुण द्वादश जिनराया,
उपज्यो केवल ज्ञान भई प्रभु की निर्मल काया,
समोसरण झट रची इन्द्र यश तीन लोक छाया,
रलमिल नाटक करें कहें धन धन प्रभु की माया,
नारोवाल के बीच प्रभु ने आसन जा लाया,
'चन्दूलाल' मति अल्प देख दर्शन चित हर्षाया ॥

बावन

मुनि सुवृत्त के बलिहारी कर दर्शन सुमता जागी ।
जब दर्श प्रभू के पाए, भव भव के फंद नसाए,
प्रभु निज सेवक सुखकारी ।
प्रभु राजग्रही में जन्मे, भए देव मुदित तन मन में,
तन श्याम वरण अवतारी ।
कर कंकन मुकुट सुहावे, प्रभु तीन लोक यश गावे,
पग लक्षण कच्छप धारी ।

---

१. प्रभु की मूर्ति को देखने से ही तिमिर भाग गया अर्थात् मोहान्धकार नष्ट हो गया ।

बामें चौबीस जिनंदा, दाहिने श्री जिनवर चन्दा,
दोऊ तरफ ऋषभ जिन भारी।
प्रभु नारोवाल में राजें, दर्शन करत्यां[1] दुख भाजें,
प्रभु पूजत सब नर नारी।
प्रभु 'चन्दूलाल' मतिहीना, तोरे चरण कमल चित दीना,
भव भव के फंद निवारी॥

तिरेपन

मुनि सुवृत्त महाराज के दर्श किए जब आन।
तन मेरे सुमता जगी मिट्यो तिमिर अज्ञान॥
प्रभू के दर्श किए दुख जाता है,
नारोवाल के बीच प्रभु का अद्भुत बिम्ब सुहाता है,
सिर ऊपर मुकुट विराज रहा नर नारी दर्शन पाता है,
दोउ तरफ ऋषभ जिनराज रहे तन देख मेरा हर्षाता है,
सब श्रावक पूजन करें सदा दाहिने श्री चन्दा भाता है,
बामें चौबीस जिनंद प्रभू का तीन लोक यश गाता है,
क्या[2] दर्श प्रभु का करने से भव भव का फंद नसाता है,
अब 'चन्दूलाल' पे कृपा करो तुम चरण कमल चित लाता है,
मैं दास तुम्हारा, करूँ वन्दन बहुवारा,
तुम नाथन के नाथ करो सेवक निस्तारा॥

---

१. करते ही
२. आनन्द, सूचक-जैसे—क्या आनन्द आता है!

चव्वन

वेगि तुम दर्शन दीजो मैं चरणों का दास॥
हूँ अति मूढ़ महा अज्ञानी ज्ञान दीजो जी,
तुमरे चरण में आन पड़ा सुध आन लीजो जी,
नौका अटक रही सागर में पार कीजो जी,
हाथ जोड़ इक करूँ बेनती मान लीजो जी,
जन्म मरण का कष्ट बड़ा सोई हान कीजो जी,
तुम अनाथ के नाथ दास पहचान लीजो जी,
'चन्दूलाल' निज जान अभय अस्थान[1] दीजो जी॥

पचपन

तुमरे चरण चित लाऊँ जगत् सब तज के॥
पतित उधारन नाम तिहारो तुमरे बलि बलि जाऊँ,
तुमरे नाम की नौका बनाके भवसागर तर जाऊँ,
तुम बिन और न दीखे कोई जित बल[2] अर्ज़ लगाऊँ,
'चन्दूलाल' को दर्शन देना भव भव में यही चाऊँ[3]॥

---

१. स्थान, जगह, पद
२. जिसकी ओर
३. चाहूँ

छप्पन

करले प्रभु पूजन प्राणी तेरी जावे उमर विहानी।
बालपना हँस खेलत खोया आवत फेर जवानी,
विषय भोग में सुरत लगाई हो फिरया अभिमानी,
वृद्ध भयो कर काँपन लागे नैन जोत घट आनी,
सुत दारा बंधु यही कहत हैं मत्त नहीं दुखदानी,
मात पिता तिरिया बाँधव से ममता क्यों तू बढ़ानी,
अन्त समय यम पकड़ लजावें प्रभु बिन को न सहानी,
छोड़ जगत जंजाल बावरे प्रभु भक्ति में धर ध्यानी,
'चन्दूलाल' प्रभु दास कोटले[1] साची बात बखानी ॥

सत्तावन

बात सुनाऊँ साच मैं ज़रा करूँ न देर।
अब घर को सब ही चलो होती है अंबेर[2] ॥
होती है अंबेर मेरी निद्रा ने अकल भुलाई है,
सूली पे निद्रा आती है यह साची बात सुनाई है,

१. मालेरकोटला निवासी
२. अबेर, देर

जग चार दिनों का है मेला सिर मौत सभी के छाई है,
कवि 'चन्दूलाल' हंकार बुरा यह सबसे भली समाई है;
झट साज उठाओ,
ज़रा मत देर लगाओ,
चलो घराँ को सभी प्रभु को शीश नवाओ ॥

परिशिष्ट—१

वाणी के पैंतीस गुण

१. संस्कारवत्तम्	जिस वचन में भाषा-शास्त्र की दृष्टि से कोई दोष न हो।
२. औदात्त्यम्	जिसमें शब्द और अर्थ विषयक गंभीरता हो।
३. उपचार परीतता	ग्रामीणता के दोष से रहित हो।
४. मेघ गंभीर घोषत्वम्	मेघ की तरह गंभीर हो।
५. प्रतिनाद विधायिता	दूर-दूर तक गूंजने वाली आवाज़ हो।
६. दक्षिणत्वम्	सरलता संयुक्त हो।
७. उपनीत रागत्वम्	शुद्ध संगीत की प्रधानता हो।
८. महार्थता	अर्थपूर्ण हो।
९. अव्याहतत्वम्	पूर्वापर-विरोध रहित हो।
१०. शिष्टत्वम्	अभिमत सिद्धान्त के प्रतिपादन से वक्ता की शिष्टता सिद्ध हो।
११. संशयानामसंभवः	जिसे सुनकर श्रोता को संशय न हो।
१२. निराकृताऽन्योत्तरत्वम्	श्रोता को शंका न हो और दूसरी बार व्याख्या न करनी पड़े।
१३. हृदयंगमता	हृदयग्राही हो।
१४. मिथः साकांक्षता	पद तथा वाक्यों में परस्पर सापेक्षता हो।
१५. प्रस्तावौचित्यम्	देश-कालानुसार हो।
१६. तत्त्वनिष्ठता	अप्रासंगिक न हो।

१७. अप्रकीर्ण प्रसृतत्वम्	अति विस्तार का अभाव हो।
१८. अस्वश्लाघान्यनिन्दता	आत्म-श्लाघा तथा पर-निन्दा से रहित हो।
१९. अभिजात्यम्	प्रतिपाद्य विषय की भूमिका बाँधी जाए।
२०. अतिस्निग्धमधुरत्वम्	मृदु एवं मधुर हो।
२१. प्रशस्यता	श्लाघा प्राप्त कराने वाली हो।
२२. अमर्मवेधिता	दूसरे का मर्म न उघाड़ा जाए।
२३. औदार्यम्	अभिधेय अर्थ की तुच्छता न हो।
२४. धर्मार्थ प्रतिबद्धता	धर्म एवं अर्थ संयुक्त हो।
२५. कारकाद्यविपर्यासः	कारक, काल, वचन, लिंग आदि का विपर्यय न हो।
२६. विभ्रमादिविमुक्तता	भ्रान्ति तथा विक्षेप से रहित हो।
२७. चित्रकृत्त्वम्	कौतूहलयुक्त हो।
२८. अद्भुतत्वम्	अद्भुत हो अर्थात् उत्सुकता जागृत करके प्रभाव जमाने वाली हो।
२९. अनतिविलम्बिता	अति बिलम्ब न हो।
३०. अनेक जाति वैचित्र्यम्	विविध वर्णनीय विषयों का निरूपण हो।
३१. आरोपित विशेषता	वचनान्तर की अपेक्षा से स्थापित विशेषता हो।
३२. सत्त्व प्रधानता	साहसकारी वर्णन संयुक्त हो।
३३. वर्ण पद वाक्य विविक्तता	वर्णादिकों की विच्छिन्नता से युक्त हो।
३४. अव्युच्छित्तिः	विविक्षितार्थ की सिद्धि तक प्रवाह रहे।
३५. अखेदित्वम्	थकावट से रहित हो।

परिशिष्ट—२

वश-योग्य पच्चीस कषाय

(क) **सोलह कषाय**

१. अनन्तानुबंधी क्रोध
२. अनन्तानुबंधी मान
३. अनन्तानुबंधी माया
४. अनन्तानुबंधी लोभ
५. प्रत्याख्यान क्रोध
६. प्रत्याख्यान मान
७. प्रत्याख्यान माया
८. प्रत्याख्यान लोभ
९. अप्रत्याख्यान क्रोध
१०. अप्रत्याख्यान मान
११. अप्रत्याख्यान माया
१२. अप्रत्याख्यान लोभ
१३. संज्वलन क्रोध
१४. संज्वलन मान
१५. संज्वलन माया
१६. संज्वलन लोभ १६

(ख) **नवनो कषाय**

१. हास्य
२. रति
३. अरति
४. शोक
५. भय
६. जुगुप्सा
७. स्त्रीवेद
८. पुरुषवेद
९ नंपुसकवेद

+९=२५

परिशिष्ट—३

चौंसठ इन्द्र

वैमानिक देवों के दस इन्द्र

१. सौधर्मेन्द्र
२. ईशानेन्द्र
३. सनत्कुमारेन्द्र
४. महेन्द्र इन्द्र
५. ब्रह्मेन्द्र इन्द्र
६. लांतक इन्द्र
७. शुक्र इन्द्र
८. सहस्रार इन्द्र
९. आनत प्राणत
१०. आरणाच्युत

भुवनपति देवों के बीस इन्द्र

११. मचरेन्द्र
१२. बलि इन्द्र
१३. धरणेन्द्र
१४. नागेन्द्र
१५. हरि
१६. हरिसह
१७. वेणुदेव
१८. वेणुदारी
१९. अग्निशिख
२०. अग्निमाणव
२१. वेलम्ब
२२. प्रभंजन
२३. सुघोष
२४. महाघोष
२५. जलकान्त
२६. जलप्रभ
२७. पूर्ण
२८. अवशिष्ट
२९. अमित
३०. अमित वाहन

व्यन्तर योनि के सोलह इन्द्र

३१. काल
३२. महाकाल

३३. सुरूप
३४. प्रतिरूप
३५. पूर्णभद्र
३६. मणिभद्र
३७. भीम
३८. महाभीम
३९. किन्नर
४०. किंपुरुष
४१. सत्पुरुष
४२. महापुरुष
४३. अतिकाय
४४. महाकाय
४५. गीतरति
४६. गीतयशा

वाण व्यन्तरों की दूसरी आठ निकाय के सोलह इन्द्र

४७. सन्निहित
४८. समानक

४९. धाता
५०. विधाता
५१. ऋषि
५२. ऋषिपालक
५३. ईश्वर
५४. महेश्वर
५५. सुवत्सक
५६. विलाशक
५७. हास
५८. हासरति
५९. श्वेत
६०. महाश्वेत
६१. पवक
६२. पवक गति

ज्योतिष्क देवों के दो इन्द्र

६३. सूर्य
६४. चन्द्रमा

परिशिष्ट—४

चौंतीस अतिशय

(तीर्थंकरों के चमत्कारी गुण)

१. शरीर अनन्त रूपमय, सुगन्धमय, रोगरहित, प्रस्वेद रहित तथा मल रहित होता है।
२. रुधिर और मांस दुग्ध समान श्वेत और दुर्गन्धहीन होता है।
३. आहार तथा निहार चर्मचक्षु गोचर नहीं होते।
४. श्वासोच्छ्वास में कमल के समान सुगंध होती है।
५. समवसरण केवल एक योजन का होता है परन्तु उसमें कोटि कोटि मनुष्य, देव, तिर्यंच बिना किसी प्रकार की बाधा के बैठ सकते हैं।
६. उनकी उपस्थिति के पचीस योजन तक कोई रोग नहीं होता।
७. लोगों का पारस्परिक बैरभाव नष्ट हो जाता है।
८. मरी का रोग नहीं फैलता।
९. अतिवृष्टि नहीं होती।
१०. अनावृष्टि नहीं होती।
११. दुर्भिक्ष नहीं पड़ता।
१२. लोगों को शासन का भय नहीं रहता।
१३. उनके वचनों को देवता, मनुष्य तथा तिर्यंच सब अपनी अपनी भाषा में समझ लेते हैं।
१४. एक योजन तक उनके वचन समान रूप से सुनाई देते हैं।
१५. सूर्य से बारह गुणा अधिक उनके भाममण्डल का तेज होता है।
१६. आकाश में धर्मचक्र होता है।

१७. आठ चँवर बगैर ढुलाए ढुलते हैं।
१८. पादपीठ सहित स्फटिक रत्न का उज्ज्वल सिंहासन होता है।
१९. प्रत्येक दिशा में तीन तीन छत्र होते हैं।
२०. रत्नमय धर्मध्वज (इन्द्रध्वज) होता है।
२१. नौ स्वर्ण कमल पर चलते हैं।
२२. मणि का, स्वर्ण का, चाँदी का—तीन गढ़ होते हैं।
२३. चार मुँह से धर्मोपदेश देते हैं।
२४. उनके शरीर परिमाण से बारह गुणा अशोक वृक्ष होता है; जो छत्र, घंटा और पताका आदि से युक्त होता है।
२५. उनके मार्ग में कांटे अधोमुख हो जाते हैं।
२६. उनके चलने पर वृक्ष भी झुक कर प्रणाम करते हैं।
२७. आकाश में दुंदुभि बजती है।
२८. योजन प्रमाण में अनुकूल वायु होती है।
२९. मोर आदि शुभ पक्षी प्रदक्षिणा देते हैं।
३०. सुगंधित जल की वृष्टि होती है।
३१. जल स्थल में उद्भूत पाँच वर्ण वाले फूलों की इतनी वृष्टि होती है कि घुटनों तक आ जाएँ।
३२. केश, रोम, दाढ़ी, मूँछ और नाखुन आदि (दीक्षोपरान्त) नहीं बढ़ते।
३३. कम से कम चार निकाय के एक करोड़ देवता पास रहते हैं।
३४. सर्व वस्तुएँ अनुकूल रहती हैं।